नायक

सत्यजित राय

H
891.442
R213N

यह विश्वविख्यात फिल्म-निर्माता सत्यजित राय की सुप्रसिद्ध फिल्म 'नायक' का नाट्यरूप है जिसका यह हिन्दी अनुवाद पहली बार प्रकाशित हो रहा है। सत्यजित राय की कृतियों में इस फिल्म का विशेष स्थान और महत्त्व रहा है। इसमें फिल्मी नायक के चरित्र और मन के जो पहलू उभरते हैं वे दर्शक—या पाठक—को अभिभूत कर लेते हैं।

सभी दृष्टियों से 'नायक' भारतीय फिल्म साहित्य की एक विशिष्ट कृति है।

CATALOGUED

नायक

[फिल्म-नाटक]

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

नायक

सत्यजित राय

213 R

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला
Indian Institute of Advanced Study
64893
21-1-83

Library IIAS, Shimla
H 891.442 R 213 N
00064893

अनुवादक : योगेन्द्र चौधरी

मूल्य : आठ रुपये (8·00)

प्रथम संस्करण 1976 © सत्यजित राय
NAYAK (Film Script), by Satyajit Ray

नायक

पात्र

अरिन्दम मुखोपाध्याय	:	जनप्रिय अभिनेता
शंकरदा	:	अरिन्दम का नाट्य गुरु
मुकुन्द लाहिड़ी	:	प्रवीण चलचित्र अभिनेता
ज्योति	:	अरिन्दम का मित्र एवं मैनेजर
वीरेश	:	अरिन्दम का मित्र एवं ट्रेड यूनियन का कार्यकर्ता
हीरालाल जी	:	चलचित्र-निर्माता

ट्रेन के यात्रियों के बीच

अदिति सेनगुप्त	:	पत्रकार
अजय	:	मध्यवित्त युवक
शेफाली	:	अजय की पत्नी
हरेन वसु	:	संपन्न व्यवसायी
मनोरमा	:	हरेन की पत्नी
बुलबुल	:	हरेन की पुत्री
प्रीतीश	:	पब्लिसिटी कंपनी का मैनेजर
माली	:	प्रीतीश की पत्नी
अघोर चट्टोपाध्याय	:	नैतिकतावादी वृद्ध
उपेन	:	कंडक्टर गार्ड
स्वामी जी		इत्यादि

• •

पूरे परदे पर अरिन्दम के माथे का पिछला हिस्सा दीख पड़ता है। अरिन्दम आईने के सामने खड़ा होकर बालों में कंघी कर रहा है। कंघी करने के बाद कंघी, ब्रश, इलेक्ट्रिक शेवर ड्रेसिंग टेबल से उठाकर, बिस्तर पर खुले पड़े अटैची केस के अन्दर रखता है। उसके बाद बगल के खुले हुए सूटकेस से टेरिलिन की एक कमीज़ बाहर निकालकर पहनता है और बटन लगाता है।

अब अरिन्दम के बेडरूम की शक्ल समझ में आती है। विशाल बेड के सिरहाने की ओर, दीवार पर, आठ-दस मढ़ी तसवीरों में से हरेक तसवीर में, अरिन्दम विभिन्न चलचित्रों के नायक की भूमिका में दीखता है। पलंग की बाईं ओर ड्रेसिंग टेबल और उसकी बगल में टेबल पर टेलीफोन, कागज़ वगैरह। कमरे की दाहिनी ओर, दीवार में जड़े, खुले हुए वार्डरोब में कुरता-कमीज़, कपड़े-लत्ते ठुंसे हुए। पलंग के पैताने एक अलमारी और उसके निकट, खिड़की के सामने सोफा, आर्मचेयर और काफी-टेबल। खिड़की से बाहर की ओर बगीचा दीख पड़ता है।

समय प्रातःकाल। अरिन्दम बाहर कहीं जाने के लिए तैयार हो रहा है, यह बात आसानी से समझ में आ जाती है।

ज्योति का प्रवेश। दरवाज़े से अन्दर आने के बाद अरिन्दम पर दृष्टि पड़ते ही अवाक् ठिठककर खड़ा हो जाता है।

ज्योति : क्यों जी, तुम जा रहे हो ?

अरिन्दम कोई उत्तर नहीं देता। वह टाई बांधने में व्यस्त है। ज्योति आगे बढ़कर सोफे पर बैठता है।

ज्योति : तुम्हारा डिसिज़न मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। चाहे जो हो, है तो सरकारी पुरस्कार ही।

अरिन्दम : वह सब पुरस्कार-वुरस्कार नहीं जानता, चौबीस घंटों के लिए झंझटों से छुटकारा पाना चाहता हूं—बस। एक तरह से प्लेन से बुकिंग न पाना बेहतर ही रहा।

ज्योति सामने की मेज़ से अरिन्दम का ५५५ सिगरेट पैकेट उठाता है।

ज्योति : यही बात अगर दो दिन पहले डिसाइड[1] करते तो पूरा का पूरा एक कूपे मिल जाता। अब तो शेयर करना पड़ेगा।

अरिन्दम अलमारी की ओर बढ़ता है।

अरिन्दम : इससे मेरा बिगड़ता ही क्या है। नींद की दवा लूंगा और लेटे-लेटे खर्राटे भरूंगा।

अरिन्दम अलमारी से एक-एक सौ रुपये के दस फड़फड़ाते नोट बाहर निकालता है।

अरिन्दम : साथ में कौन जा रहा है या कौन नहीं जा रहा है—यह सब मुझे सोचने की ज़रूरत ही क्या ?

ज्योति : फिर उन लोगों को वायर[2] कर दूं। वे लोग स्टेशन पर आएंगे।

अरिन्दम : वायर नहीं पहुंच पाएगा। फोन कर दो।

ज्योति उठकर टेलीफोन की ओर जाता है। अरिन्दम ज्योति की जगह पर—सोफे पर बैठकर जूता पहनने लगता है।

---

१. तय २. तार

अरिन्दम : सुनील को भी कर देना। २२४६३···

ज्योति डायल के बाद ऊब के साथ फोन रख देता है।

ज्योति : साला वन एटी भी एन्गेज्ड है।

अरिन्दम जूते का फीता कस रहा है।

अरिन्दम : उस तसवीर की रिपोर्ट क्या है ?

ज्योति को जैसे थोड़ी-बहुत बेचैनी का अहसास होता है।

ज्योति : महीने का आखिर है भाई, लोगों के हाथ में पैसे नहीं हैं···

अरिन्दम : पहले तो यह सब सुनने को नहीं मिला, अब क्यों सुन रहा हूं ?

ज्योति अब थोड़ी झुंझलाहट के साथ बातें करता है।

ज्योति : अच्छा, तसवीर में सिवा तुम्हारे है ही क्या ?

अरिन्दम : मैं हूं न—इज़ं' ट दैट इनफ़ ?[1]

अरिन्दम जूता पहन चुका है, वह सोफे से उठकर खड़ा होता है।

ज्योति : नॉट इनफ़ भाई, वक्त बदल गया है।

अरिन्दम कोट पहन रहा है।

अरिन्दम : नानसेन्स। साले पब्लिक·· विमज़िकल[2]···काश, सालों को स्टीम रोलर चलाकर फ्लैट कर पाता···

ज्योति : वाह भाई, वाह ! पब्लिक के बगैर खाओगे क्या ?

अरिन्दम : कुण्डु कैबिन का मछली का शोरबा और भात !

ज्योति फिर से डायल कर, टेलीफोन कान से लगाता है।

ज्योति : बहुत डिफिकल्ट[3] है। यहां तक कि मैं भी अगर चौदह

---

१. यही क्या काफी नहीं है ?   २. झक्की   ३. मुश्किल

रुपये पौंड की चाय न पिऊं तो ब्रेकफास्ट नहीं हो पाता। और मैं तो ठहरा सैटलाइट[1]।

अरिन्दम : (अखबार उठाकर ज्योति की ओर फेंकता है) थर्ड कालम के नीचे की ओर देखो—

ज्योति अखबार देखने लगता है। एक समाचार उसकी दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करता है। उसकी सुर्खियों में लिखा है : फ़िल्म स्टार इन्वाल्व्ड इन नाइट क्लब ब्राल[2]। ज्योति अवाक् हो जाता है।

ज्योति : यह क्या, यह खबर तो…।

अरिन्दम कमरे के बाहर चला जाता है। ड्राइंग रूम के एक किनारे पड़े सोफासेट से चलचित्र-निर्माता हीरालाल जी उठकर खड़े होते हैं।

अरिन्दम : कितनी देर?

हीरालाल : पांच मिनट…

अरिन्दम : आइए, चाय पीजिए।

डाइनिंगरूम

अरिन्दम और हीरालाल का प्रवेश। दस व्यक्तियों के खाने लायक मेज़ पर एक किनारे अरिन्दम बैठता है, उसकी बाईं तरफ हीरालाल।

हीरालाल : आप देहली जा रहे हैं?

अरिन्दम : लगता तो यही है।

हीरालाल : वेरी लकी[3]…आपसे मुलाकात हो गई…

अरिन्दम : नो, थैंक यू।[4]

---

१. चमचा   २. चलचित्र अभिनेता नाइट क्लब के उपद्रव में सम्मिलित।
३. भाग्य की बात है।
४. नहीं, धन्यवाद।

अरिन्दम के सामने प्लेट में केले का गुच्छा है। अरिन्दम उसे उठाकर हीरालाल की ओर बढ़ाता है।

अरिन्दम : केला ?

हीरालाल : नो सर। ओनली टी।[1]

ज्योति आता है। वह अरिन्दम की दाईं ओर हीरालाल के सामने बैठता है। समाचार पढ़कर वह अत्यन्त उत्तेजित है।

ज्योति : यह साले तरुण चक्रवर्ती के कारनामे हैं। उसका दिमाग आसमान पर चढ़ गया है।

अरिन्दम : तुम फणि को फोन करके कह दो : वेरी सॉरी, मैं जा रहा हूं, उन लोगों के लिए मैंने सिक्सटीन्थ का डेट[2] तय किया है।

ज्योति : और फॉर्चुन फिल्म्स के लिए ?

अरिन्दम : जहन्नुम में जाए।

ज्योति : जहन्नुम में तो जाएगा नहीं, मैनेज मुझे ही करना होगा।

हीरालाल जी अपने बैग से कागज़ वगैरह बाहर निकालते हैं।

हीरालाल : मैं अपना काम करा लूं।

अरिन्दम : क्या, कांट्रैक्ट ?

हीरालाल दांत निपोरते हैं।

अरिन्दम : आपका पंचांग क्या बताता है ? दिन शुभ है ?

हीरालाल : बेस्ट ! मोस्ट ऑस्पिशॅस[3] !

शयन-कक्ष से टेलीफोन की घंटी सुनाई पड़ती है। ज्योति मेज़ छोड़कर चला जाता है। बेयरा अरिन्दम के सामने

---

१. नहीं महाशय, सिर्फ चाय। २. सोलहवीं तारीख

३. सबसे अच्छा। अत्यंत सौभाग्यशाली

आमलेट रखता है।

अरिन्दम : मेरा पंचांग उलटा ही बता रहा है, हीरालाल जी।

हीरालाल : उल्टा ? कौन-सा पंचांग ?

अरिन्दम : बताता है कि यात्रा शुभ है, मगर कॉण्ट्रैक्ट।

हीरालाल : हें हें, आप मजाक कर रहे हैं, अरिन्दम बाबू।

अरिन्दम आमलेट खाना शुरू करता है।

अरिन्दम : आप अखबार पढ़ते हैं ?

हीरालाल : अखबार ?

अरिन्दम : शेयर मार्केट के अलावा अखबार में कुछ और पढ़ते हैं ?

हीरालाल : आज तो अब तक पढ़ा नहीं है।

अरिन्दम : फिर आपको उस समाचार का पता नहीं है ?

हीरालाल : कौन-सा समाचार ?

अरिन्दम : परसों रात, एक क्लब में, हलके नशे की हालत में मैंने एक भले मानस पर प्रहार किया···

हीरालाल : प्रहार···?

अरिन्दम : लापड़···झापड़।

हीरालाल : हत्त···!

अरिन्दम : धुलाई समझते हैं, धुलाई ?

हीरालाल : ओ हां-हां···हें-हें-हें···

अरिन्दम : भले आदमी ने मुझे धमकियां दीं···

हीरालाल : अरे, अरे !

अरिन्दम : और सो भी कुछ महिलाओं के सामने। ऐसी हालत में कहीं बरदाश्त किया जा सकता है ?

हीरालाल : कभी नहीं, कभी नहीं।

अरिन्दम : भले आदमी को यह पता ही नहीं था कि मैं एक चीज की भूमिका में बहुत ही अच्छा अभिनय कर सकता हूं—और वह है मुष्टियोद्धा···

हीरालाल : मुप···?

अरिन्दम : ए स्ट्रेट लेफ्ट टु द जॉ।[1]

अरिन्दम की मुट्ठी हीरालाल के थुथने की ओर बढ़ती है। हीरालाल चिहुंककर हंसता है, फिर हाथ उठाकर बचाव करता हुआ पीछे हट जाता है।

हीरालाल : अरे, अरे, अरे !

अरिन्दम : अवश्य ही पीने की मात्रा ज़रा ज़्यादा हो जाने के कारण निशाना बेकार नहीं गया। मगर भले आदमी को दुबारा धमकियां देने का मौका नहीं मिला।

हीरालाल : आपने ठीक किया है, बिलकुल ठीक।

अरिन्दम : मगर हुशअप[2] करने की चेष्टा के बावजूद खबर आज अखबार में छप गई है।

हीरालाल : इससे क्या आता-जाता है, अरिन्दम बाबू ?

अरिन्दम खाना खाकर उठ चुका है। वह कमरे के एक किनारे स्थित कैबिनेट खोलकर उससे व्हिस्की की बोतल बाहर निकालता है।

अरिन्दम : और कोई बात नहीं है, हीरालाल जी···सिर्फ आज कॉण्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर करने का दिन नहीं है।

हीरालाल हड़बड़ाता हुआ, कुरसी छोड़कर अरिन्दम के सामने आकर खड़ा होता है।

हीरालाल : आपसे तो मेरी बातचीत हो चुकी है···

अरिन्दम : मूड नहीं है, हीरालाल जी—शॉट एन० जी० हो जाएगा।

अरिन्दम बेडरूम की ओर बढ़ता है। हीरालाल की स्थिति चिन्तनीय है।

---

१. बायें हाथ से सीधे जबड़े पर

२. दबाने

अरिन्दम : मैं वृहस्पतिवार को लौट रहा हूं—उसके बाद आइएगा।

वेडरूम। ज्योति टेलीफोन से बातचीत कर रहा है।

ज्योति : ज़रा थामे रहिए, वे आ रहे हैं।

अरिन्दम आता है। ज्योति चेहरे पर अप्रसन्नता का भाव ओढ़े टेलीफोन उसकी ओर वढ़ा देता है।

ज्योति : हिरोइन।

अरिन्दम की भौंहें तन जाती हैं। व्हिस्की की वोतल सूटकेस के अन्दर रखकर टेलीफोन अपने हाथ में लेता है।

अरिन्दम : येस ?

स्त्री स्वर : तुम दिल्ली जा रहे हो ?

अरिन्दम : हां।

स्त्री : ट्रेन से ?

अरिन्दम : ट्रेन से।

स्त्री : मैं स्टेशन पर आऊं ?

अरिन्दम : न आने से ही मुझे खुशी होगी।

स्त्री : तुम मुझे गलत समझ रहे हो।

अरिन्दम : शायद नहीं।

स्त्री : मैं सारी वातें एक्सप्लेन कर सकती हूं।

अरिन्दम : ज़रूरी नहीं है।

स्त्री : तुम ऐसा क्यों वोल रहे हो ?

अरिन्दम : कारण अवश्य ही है।

स्त्री : कारण क्या है ?

अरिन्दम : कहने के लिए समय नहीं है। मैं रवाना हो रहा हूं।

स्त्री : ओ···

अरिन्दम : चलता हूं।

अरिन्दम गम्भीरता के साथ टेलीफोन रख देता है।

हावड़ा स्टेशन। दिल्ली जाने वाली वेस्टिव्यूल ट्रेन का चार वर्थों का प्रथम श्रेणी का कमरा (डी)। हरेन वोस अपनी अस्वस्थ पुत्री वुलवुल को गोद में लेकर ऊपर के वर्थ पर सुला देता है। इन दोनों के अतिरिक्त कमरे में हरेन की पत्नी मनोरमा तथा कण्डक्टर गार्ड उपेन वाबू हैं।

उपेन : इनके लिए कोई स्पेशल खाना वनेगा ?

मनोरमा : थोड़ा-सा चिकेनस्टू अगर वनवा दें तो···

हरेन : चिकेनस्टू···

उपेन अपने नोट वुक में उनका आर्डर लिख लेता है।

उपेन : आप लोग यहीं लंच लेंगे ?

हरेन : मेरी पत्नी यहीं खाना खाएंगी, मैं डाइनिंग कार में।

उपेन पेन्सिल जेव में खोंसता हुआ कमरे से वाहर चला जाता है।

कारीडोर।

उपेन के डी से निकलते ही वी से एक भला आदमी सर वाहर निकालकर उपेन को पुकारता है। वे हैं—प्रीतीश सरकार।

प्रीतीश : सुनिए जनाब···

उपेन रुककर पीछे की ओर लौटता है।

प्रीतीश : वो···मिस्टर हरेन बोस क्या इसी ट्रेन से ट्रेवल कर रहे हैं ?

उपेन : जी हां—कंपार्टमेंट डी।

प्रीतीश : ओ, थेंक्स।

वी कमरा।

प्रीतीश कारीडोर से अन्दर आता है। यह भी चार वर्थों का कमरा है। इस तरफ प्रीतीश की पत्नी माली वेंच पर वैठी हुई कमपैक्ट खालकर साज-शृंगार करने में व्यस्त है।

प्रीतीश जेव से एक सिगरेट निकालता है।

प्रीतीश : खैर···दो कंपार्टमेंट के वाद ही हैं।

माली : तुम्हें क्या संदेह हो रहा था ?

प्रीतीश : कहा नहीं जा सकता। आखिरी घड़ी में चेंज आफ प्लान्स[1] हो जाता है···

माली : होता तो खुशी होती।

प्रीतीश : मतलव ?

माली : छुट्टियों में जवरन काम वटोर लाने की सनक मुझे अच्छी नहीं लगती।

एक गेरुआधारी यात्री कुली और माल-असवाव के साथ कमरे में घुसता है और दूसरा निचला वर्थ दखल करता है।

प्रीतीश उस ओर ध्यान नहीं देता।

प्रीतीश : क्या कह रही हो माली। इसी वजह से तो मैंने छुट्टी ली। कितना बड़ा मुवक्किल है, मालूम है ? उन लोगों के विज्ञापन का वजट है पांच लाख रुपये। उसे हाथ में

---

१. कार्यक्रम वदल जाता

कर सका तो मेरा पूरा दफ्तर···क्या हुआ ?

माली के चेहरे पर आश्चर्य का भाव तैर रहा है। आंखों को फैलाये वह खिड़की से बाहर की ओर निहार रही है।

प्रीतीश : किस पर नज़र पड़ी ?

माली : अरिन्दम।

प्रीतीश : कौन-सा दम ?

माली : अरिन्दम मुखर्जी।

प्लेटफार्म। भीड़ के सैलाब को चीरते हुए अरिन्दम और ज्योति कमरे की ओर बढ़ रहे हैं। चारों तरफ शोर-गुल, कशमकश, तरुणों में उल्लास। ये लोग अरिन्दम के भक्त हैं। अरिन्दम किसी तरह आगे बढ़कर दरवाज़े पर पहुंचता है। ज्योति उसके पीछे उमड़ती भीड़ को अपनी पीठ से रोके है। उपेन बाबू अरिन्दम को खींचकर ऊपर ले आते हैं। ज्योति भी किसी तरह ऊपर पहुंचकर दरवाज़ा बन्द कर देता है।

कॉरीडोर।

उपेन, अरिन्दम और ज्योति आगे बढ़ते हैं।

ज्योति : आप कूपे की बाबत क्या कह रहे थे ?

उपेन : कहने का मतलब है कि इन्हें अगर कूपे में असुविधा हो तो दो लोअर बर्थ का कैन्स्लेशन है···

अरिन्दम : क्यों, असुविधा क्यों होगी ?

उपेन : जी, कहने का मतलब है, अघोर चाटुर्ज्या आपके कूपे में जा रहे हैं।

अरिन्दम : ओ, वही न, जो स्टेट्समैन में कड़े-कड़े पत्र लिखा करते

हैं ?

ज्योति : ओ बाबा—वे सिनेमा को ही जड़-मूल से उखाड़ना चाहते हैं ?

उपेन : कहने का मतलब है, आप जा रहे हैं, यह सुनकर वे ज़रा···

अरिन्दम : चलिए, ज़रा उस भलेमानस को देख तो आऊं···

एक कमरा। (यही कूपे है)।

नीचे के बर्थ पर खिड़की की तरफ बैठे वृद्ध अघोर चाटुर्ज्या अटैची केस से मफलर निकालकर गले में लपेट रहे हैं, तभी दरवाज़े के सामने उपेन, अरिन्दम और ज्योति का आविर्भाव। उपेन वृद्ध से अरिन्दम का परिचय कराता है।

उपेन : आप ही हैं मिस्टर मुखर्जी ?

अघोर : आप सिनेमा में एक्टिंग करते हैं ?

अरिन्दम : जी हां।

अघोर : ओ। मैं सिनेमा नहीं देखता। ऑन प्रिंसिपल[1]। एक बार एक कोलिंग के फेर में पड़ गया था—इन नाइनटीन फ़ोर्टीफ़ोर—हाउ ग्रीन वाज़ माइ वैली।

अरिन्दम : वह तो अच्छी तसवीर है।

अघोर : वट एज़ ए रूल—एज़ ए रूल—फिल्म्स आर बेड।[2]

अरिन्दम : मगर फिल्म एक्टर ने कौन-सी गलती की है, बाबा ?

अघोर : आप शराब पीते हैं ?

अरिन्दम : थोड़ी-बहुत···

अघोर : आल फिल्म एक्टर्ट ड्रिंक—एज़ ए रूल। इट शोज़ ए

---

१. सिद्धांततः

२. नियमतः सिनेमा खराब हुआ करते हैं।

लैक आफ रिस्ट्रेन्ट, ऐण्ड ए लैक आफ डिसिप्लिन ।[1] आप क्या जर्नी के दौरान शराब पीते हैं ?

अरिन्दम : सेकेण्ड नेचर···आप तो समझते ही होंगे ।

अघोर : फिर भी आपको यह जताना अपना कर्तव्य समझता हूं कि ऐलकॅहॉल की गंध से मुझे नौशिया होती है—ऐंड आई एम सेवनन्टी-वन । एज़ सच आई एक्सपेक्ट सम कन्सिडरेशन फ्राम माइ फैलो पैसेंजर्स ।[2]

अरिन्दम : आपके लिए चिन्ता की कोई बात नहीं है बाबा । मैं दूसरे कमरे में हूं । आपका नाम सुना था—इसीलिए परिचय प्राप्त करने आ गया ।

अघोर : ओ आइ सी ।

डी कमरा ।

बुलबुल ऊपर के बर्थ पर, कंबल ओढ़कर लेटी-लेटी 'पथेर पांचाली' पढ़ रही है, उसके मुंह में थर्मामीटर लगा है । आवाज़ सुनकर वह ज्योंही पुस्तक हटाती है, उसकी आंखों में टकटकी बंध जाती है । अरिन्दम, ज्योति और उपेन ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया है । ज्योति अरिन्दम का माल-असबाब उतार कर रखता है ।

उपेन : हो सकता है आपको थोड़ी···

अरिन्दम : नहीं-नहीं, ठीक है ।

तीनों व्यक्ति फिर कमरे से बाहर चले जाते हैं ।

बुलबुल मुंह से थर्मामीटर बाहर निकालकर अस्फुट स्वर

---

१. इससे नियन्त्रण और अनुशासन की कमी का पता चलता है ।

२. शराब की गंध से मुझे मतली आने लगती है । सत्तर बरसों के होने के नाते मैं अपने सहयात्रियों से तनिक लिहाज की प्रत्याशा करता हूं ।

में चिल्ला उठती है।

बुलबुल : मां।

मनोरमा : चुप। देख चुकी हूं—

मनोरमा दवा की एक नयी शीशी निकालकर हरेन की ओर बढ़ाती है।

मनोरमा : ज़रा इसे खोल दो···

मनोरमा थर्मामीटर देखती है।

मनोरमा : हॅन्ड्रड पॉइन्ट फ़ोर।

हरेन शीशी का ढक्कन खोलने की चेष्टा करता है।

हरेन : इन लोगों में कोई सेन्स नहीं है। उस आदमी को यहीं लाकर घुसा दिया।

मनोरमा : इससे क्या हुआ ?

हरेन : अखबार में उस खबर पर नज़र नहीं पड़ी ?

मनोरमा : यही क्या सब कुछ है ? और प्राइज़ लेने जो दिल्ली जा रहा है ?

हरेन : स्कैण्डल इज़ स्कैण्डल।[1]

हरेन अब भी शीशी का ढक्कन खोलने की चेष्टा कर रहा है। गार्ड की सीटी सुनायी पड़ती है।

दिल्ली जाने वाली ट्रेन का इंजन एक झटके के साथ वाष्प का गुबारा उगलता हुआ आगे बढ़ने लगता है।

अरिन्दम चलती गाड़ी के दरवाज़े के सामने खड़ा है। अपने भक्तों की विशाल टोली से वह विदा ले रहा है। ट्रेन जब कुछ दूर आगे सरक जाती है, वह दरवाज़े के सामने से हट जाता है।

---

१. बदनामी बदनामी ही होती है।

कारीडोर।

अरिन्दम बाहर के दरवाज़े से प्रवेश करता है। एक गैर-बंगाली महिला सात-आठ साल की एक लड़की (नाम रीटा) का हाथ सम्हाले बाथरूम की ओर जा रही है। अरिन्दम उन्हें जाने का रास्ता देता है, उसके बाद डी कमरे की ओर बढ़ता है।

डी कमरा।

अरिन्दम का प्रवेश। हरेन अब भी शीशी का ढक्कन खोल नहीं सका है, हालांकि कोशिश करने से वह बाज़ नहीं आया है।

हरेन : डिस्गस्टिंग।[1]

मनोरमा : बॉय या बेयरा—जो है, उसे पुकारकर कहो न···

अरिन्दम हलके कुतूहल से हरेन की ओर देखता है।

अरिन्दम : क्या है, स्क्रू कैप ?

हरेन : यह सब वाहियात चीज़ें क्यों···

अरिन्दम : एक बार मैं कोशिश करके देखूं ?

बुलबुल पुस्तक की ओट से अपने हीरो की ओर आंखें दौड़ाती है। हरेन अन्ततः अरिन्दम की ओर शीशी बढ़ा देता है।

हरेन : देखिए, तब हां···

अरिन्दम ज़ोरों से ऐंठकर शीशी का ढक्कन खोल देता है। बुलबुल की आंखों में चमक खेल जाती है।

हरेन : ओ···थैंक्स।

अरिन्दम : हाथ में पसीना रहने के कारण असुविधा होती है।

हरेन : हां—पर्सपिरेशन[2]···

---

१. विरक्तिकर

२. पसीना

... संस्थान शिमला ... 64893

हरेन रूमाल से पसीना पोंछता हुआ वाहर कारीडोर में जाकर खड़ा होता है। अरिन्दम अपनी सीट पर बैठकर अपने अटैचीकेस से एक फाइल वाहर निकालता है।

मनोरमा : मनोरमा भी आपका अभिनन्दन करती है।

अरिन्दम : इसलिए कि उसे मैंने खोल दिया।

मनोरमा : आप प्राइज़ लेने दिल्ली जा रहे हैं न ?

अरिन्दम : ओ, यही कहिए न।

अरिन्दम की आंखें वुलवुल पर जाती हैं।

अरिन्दम : उसे क्या हुआ है ?

मनोरमा : सात-आठ महीने से ज्वर से पीड़ित है। वह आपकी वड़ी ही भक्त है।

अरिन्दम मुस्कराता है। बुलबुल उसकी ओर सलज्ज परन्तु सप्रशंस दृष्टि से निहारती है।

मनोरमा : हम लोगों ने आपकी नयी तस्वीर अव तक देखी नहीं।

अरिन्दम : अच्छा ही किया है।

मनोरमा : ऐसा मत कहिए। हम आपकी कोई भी तसवीर देखने में देरी नहीं करते।

हरेन कारीडोर से तिरछी निगाहों से कमरे की घटना का पर्यवेक्षण कर रहा है।

मनोरमा : अपनी लड़की की वीमारी की वजह से इसे देख नहीं पायी। वह वीमार पड़ी और उधर आपकी तसवीर रिलीज़ हुई।

हरेन कमरे में लौट आता है। वह अपनी पत्नी की बगल में अरिन्दम के सामने बैठ जाता है।

हरेन : आपकी लाइन में इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट की झंझट फेस[1] नहीं करनी पड़ती है ?

---

१. सामना करना

अरिन्दम : वह तो होती ही है। आखिर कारोबार ही ठहरा।

हरेन : अब की जापान में देखा कि वे लोग बहुत ही एडवांस कर रहे हैं। हालीवुड तो बहुत दिनों तक बिलकुल वो था, मगर अब देखा कि एक तरह का स्लम्प[1] चल रहा है। ज़्यादातर स्टूडियो आइडल[2] पड़े हैं या लोग-बाग टेलीविज़न पर तसवीरें देखते हैं। देखने में बड़ा बुरा लगा। आफटर ऑल देयर्स नथिंग टू बीट अमेरिकन मुवीज़...[3]

अरिन्दम : यह बात सही है। हमने अभिनय के क्षेत्र में जो कुछ भी सीखा है, वह सब तो उन्हीं लोगों से।

हरेन : अन्यथा नहीं सोचिएगा। अपने देश में हम लोग क्वालिटी के लिए सर खपाना नहीं चाहते। हम लोगों का मोटो ही है—प्रॉड्यूस मोर ऐण्ड प्रॉड्यूस रबिश्।[4]

अरिन्दम हाथ में फाइल थामे उठकर खड़ा हो जाता है। हरेन बोस का बड़बड़ाना अब उसे अच्छा नहीं लग रहा है।

अरिन्दम : हां...इसी वजह से फ़ैमली प्लानिंग इतनी ज़रूरी हो गयी है।

अरिन्दम दरवाज़े से बाहर निकलकर बायें मुड़ता है और डाइनिंग कार की ओर चला जाता है। हरेन मनोरमा पर अपनी दृष्टि स्थिर करता है—भाव ऐसा है जैसे कह रहा हो : उसने कहा क्या, सुना न।

डाइनिंग कार।

---

१. मन्दी २. बेकार

३. जो कुछ हो, अमेरिकी सिनेमा को पराजित नहीं किया जा सकता।

४. अधिक पैदा कीजिए और कूड़ा-कचरा पैदा कीजिए।

मेज़ की एक तरफ अजय और उसकी पत्नी शेफाली बैठे हैं,
दूसरी तरफ अदिति। तीनों के सामने कोकाकोला की बोतलें हैं। शेफाली के हाथ में एक पत्रिका है, नाम : 'आधुनिका'।

शेफाली : बाप रे, तुम अकेली यह पत्रिका निकालती हो ?

अदिति : और दो व्यक्ति हैं, तब हां, उत्साह खास तौर से मेरा ही है।

शेफाली : ये सब औरतों के द्वारा ही लिखे गए हैं ?

अदिति अपने बैग से ढेर सारी पांडुलिपि निकालकर दिखाती है।

अदिति : यह देखिए—पढ़ती, हूं प्रूफ देखती हूं···रचनाओं की कोई कमी नहीं होती।

अजय शेफाली के हाथ से पत्रिका लेकर उसे उलट-पलट कर देखता है।

अजय : इससे आपको कोई लाभ होता है ?

अदिति : होता, अगर और कुछ विज्ञापन मिल जाते।

शेफाली : (अजय से) तुम तो भई, बहुतों को जानते-पहचानते हो, ज़रा कह-सुन दो न।

अदिति : कम से कम अपनी पत्नी को ही सब्स्क्राइबर[1] बना दें, यही काफी है।

अजय : ग्लैडली। कितना डैमेज होगा ?[2]

अदिति : साल में दस रुपये। इस मामले में मैं बिलकुल निर्लज्ज हूं।

अजय मनीबेग से दस रुपये का एक नोट निकालकर अदिति

---

१. ग्राहक

२. खुशी से। कितनी हानि होगी ?

की ओर बढ़ा देता है।

शेफाली : तुम भई, घर-घर जाकर ग्राहक बनाओ। मेरे पति की तरह तुम्हें बहुत-से ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जो तुम्हें देखते ही दस रुपये दे देंगे।

अदिति मुस्कराती है। वह रसीद-बही निकाल रही है।

अदिति : नाम क्या लिखूं ?

अजय : शेफालिका देवी।

अदिति : दिल्ली में अबकी किसी ग्रांट के लिए चेष्टा करूंगी। मेरे एक चाचाजी एड्यूकेशन मिनिस्ट्री में काम करते हैं···

पिछले दरवाज़े से अरिन्दम का प्रवेश। उसको देखते ही डाइनिंग कार के कर्मचारियों में हड़बड़ी मच जाती है। शेफाली की आंखें अरिन्दम पर जाती हैं। अरिन्दम उनकी मेज़ से होता हुआ डाइनिंग कार के पीछे की तरफ चला जाता है। शेफाली बेहद उत्तेजना में है।

शेफाली : ऐ···।

अजय की दृष्टि भी अरिन्दम पर पड़ी है। वह शेफाली की ओर मुड़ता है।

अजय : खैर···तुम्हारी यात्रा तो सार्थक रही।

अदिति रसीद लिखने के बाद पीछे की ओर मुड़कर देखती है।

अदिति : अरिन्दम मुखर्जी हैं न ?

शेफाली : तुम्हें वह अच्छा नहीं लगता ?

अदिति : भले आदमी की मैंने ज़्यादा तसवीरें देखीं नहीं—तब हां, बुरा नहीं।

शेफाली : ऐ, उसके विषय में अखबार में क्या तो छपा है।

अजय : ज़रा और ज़ोर से बोलो, तभी सुन पाएगा।

अदिति बैग से एक कागज़ निकालकर खड़ी हो जाती है।

अदिति : पिन्टु के लिए आटोग्राफ ले आऊं।

अरिन्दम के सामने शीतल पेय रखा है। कुल मिलाकर उसने एक सिगरेट जलायी है कि तभी अदिति सामने आकर खड़ी होती है।

अदिति : एक्सक्यूज़ मी—मुझे आटोग्राफ चाहिए।

अरिन्दम गरदन उठाकर एक वार अदिति की ओर देखता है और उसके हाथ से पत्रिका ले लेता है।

अरिन्दम : ज़रूर-ज़रूर···

अरिन्दम जेव से कलम निकालता है।

अदिति : अपनी चचेरी वहन के लिए चाहिए।

अरिन्दम और एक वार अदिति की ओर देखता है।

अरिन्दम : यही कहिए न। देखने से आप हस्ताक्षर लेने वाली टाइप की जैसी नहीं लगती हैं।

अरिन्दम की कलम में सम्भवतः स्याही नहीं है। दो वार हस्ताक्षर करने की चेष्टा के वावजूद लिखावट नहीं उग पाती है। अदिति अपना वैग खोलकर कलम निकालने जा रही है। अरिन्दम अपनी कलम झाड़ता है।

अरिन्दम : शायद आपमें वंगला तसवीरें देखने की वुरी लत नहीं है?

अरिन्दम अन्ततः पीने के पानी के गिलास से कलम भिगोता है। अव वह हस्ताक्षर कर पाता है।

अदिति : कम ही देखा करती हूं···

अरिन्दम : वुरी लगती हैं न?

अरिन्दम हस्ताक्षर किया हुआ कागज़ अदिति को लौटा देता है।

अदिति : यथार्थ का थोड़ा अभाव रहता है।

अरिन्दम : बी० ए० पास नायिका को कभी विरह का गीत नहीं गाना चाहिए—है न ?

अदिति : हां···और नायक होने से ही सर्वगुणसंपन्न देवतुल्य व्यक्ति नहीं होना चाहिए।···थैंक यू।

अदिति हस्ताक्षर लेकर चली जाती है। अरिन्दम एक क्षण के लिए कुतूहल के साथ अदिति की ओर देखता है, उसके बाद फाइल निकालकर अपने आगामी चल-चित्र नाट्य में खो जाता है।

अदिति अपनी जगह पर आकर बैठती है।

अदिति : पता नहीं, भले मानस ने क्या सोचा होगा।

शेफाली : क्यों ?

अदिति : मैं सच्ची बातें दबाकर नहीं रख सकी।

शेफाली : बाप रे, कौन-सी सच्ची बात कह आयीं ?

अदिति : आपने 'मन का मनुष्य' देखा है ?

शेफाली : वही न, जिसमें वह टेनिस खेल रहा है ?

अदिति : सिर्फ खेलता ही है ? चैम्प्यन है चैम्प्यन। टेनिस चैम्प्यन, तैराकी का चैम्प्यन; गीत जानता है, नाच जानता है, एम० ए० में फर्स्ट क्लास, प्रगतिशील, परले दर्जे का प्रेमी···अच्छा बताइए तो सही, इतनी सारी बातों पर विश्वास किया जा सकता है ?

अजय उंगली से अपनी पत्नी की ओर इशारा करता है।

अजय : आप करती हैं।

शेफाली : सो जो चाहे कह लो भाई। जब तक देखती रहती हूं, वे सब बातें ध्यान में आतीं ही नहीं।

अजय : जानती हैं, असली बात क्या है ?···वे ठहरे कलिकाल

के कन्हैया और ये लोग लुकी-छिपी गोपिकाएं।

शेफाली : इस्स, छिः छिः छिः ।

अदिति : वेशर्म ।

अदिति वैग खोलकर कोकाकोला की कीमत चुकाने जा रही है। अजय उसे रोकता है।

अजय : यह क्या हो रहा है ? आप क्यों दे रही हैं ? वैग वंद कीजिए।

कारीडोर।

हरेन वोस डी कमरे से निकलकर डाइनिंग कार की ओर जाते हैं। प्रीतीश सरकार अपने कमरे के दरवाज़े से हरेन वोस को देखता है। प्रीतीश कमरे में लौट आता है।

वी कमरा।

माली एक अमेरिकी मासिक सीने पर खुली हुई अवस्था में रखे पीठ के वल लेटी है। बगल की वेंच पर गेरुआ-धारी साधु वावा मुंह वाये खर्राटे भर रहे हैं। प्रीतीश माली की ओर वढ़ता है।

प्रीतीश : सुनो—भले आदमी डाइनिंग कार की ओर गए हैं—मैं चला।

माली : और मैं ?

प्रीतीश : तुम भी आओ, मगर थोड़ी देर बाद। बड़ी मछली है न, फंसाने में वक्त लगेगा।

माली फिर से पत्रिका उठा लेती है।

माली : ठीक है।
प्रीतीश : बुरा मान गयीं ?
माली : कहा न, कि ठीक है।
प्रीतीश : अगर बात में ला सका···नेक्स्ट सालगिरह पर एक···
माली : पर्ल नेकलेस।

माली के बोलने की मुद्रा से लगता है कि प्रीतीश ने नेकलेस की बात उसे इसके पूर्व भी बहुत बार कही है। प्रीतीश चला जाता है।

डाइनिंग कार।

हरेन बोस एक खाली मेज़ पर बैठे डाइनिंग कार के एक कर्मचारी को अपनी बातें सुना रहा है।

हरेन : दार्जिलिंग अंचल में वास करता हूं और आप लोगों ने चाय तक सर्व नहीं किया ? बात क्या है ?
कर्मचारी : जी, चाय तो सर, टी टाइम में···अभी सिर्फ ड्रिक्स।
हरेन : ड्रिक्स का मतलब ? बियर है ?
कर्मचारी : हुजूर अलकोहल तो···
हरेन : वेल, कैन आइ हैव ए कोक देन ?[1]

कर्मचारी को 'कोक' शब्द का अर्थ मालूम नहीं है, फलस्वरूप वह किंचित् अवाक् है। प्रीतीश उसके पीछे खड़ा है। वह कर्मचारी के कंधे को हौले से थमथपाता है।

प्रीतीश : कोकाकोला, कोकाकोला।
कर्मचारी : ओ···येस सर।
प्रीतीश : मेरे लिए भी एक।

---

१. तो क्या मुझे एक कोक दे सकते हैं ?

कर्मचारी चला जाता है। प्रीतीश हरेन की मेज़ की ओर जाता है।

प्रीतीश : मे आइ जाइन यू सर ?[१]

हरेन : आपको तो ठीक-ठीक···

प्रीतीश हरेन के सामने बैठता है।

प्रीतीश : मैं आपको पहचानता हूं।

हरेन : बाबा रे, मैं तो कोई फिल्म स्टार नहीं।

प्रीतीश : मेरे लिए फिल्म स्टार की तुलना में आपको ही पहचानना स्वाभाविक है।

प्रीतीश जेब से विज़िटिंग कार्ड निकालकर हरेन की ओर बढ़ाता है। हरेन कार्ड ले लेता है। उसमें लिखा है :

प्रीतीश सरकार

स्पेक्ट्रम एड्वर्टाइज़िंग

हरेन : प्रीतीश···

प्रीतीश : राइम्स विद ब्रिटिश।

हरेन : और स्पेक्ट्रम क्यों ?

प्रीतीश : वह, इसलिए कि काम का रेन्ज समझ में आता है।

हरेन : सो तो समझा, मगर विज्ञापन के साथ कोई सम्बन्ध तो रहना चाहिए।

प्रीतीश : आप मिस्टर नंदी को पहचानते हैं—बेंगाल बिस्कुट्स ?

हरेन : जीतेश ?

प्रीतीश : येस सर।

हरेन : जीतेश मेरा क्लासमेट[२] था···

प्रीतीश : उन लोगों का काम हमीं करते हैं—आप उनसे पूछ सकते हैं।

---

१. क्या मैं आपके साथ शामिल हो सकता हूं ?

२. सहपाठी

हरेन : जीतेश बहुत अच्छा हाकी खेलता था···

प्रीतीश अपने सुविधानुसार बातों को मोड़ देने की जी-जान से कोशिश करता है।

प्रीतीश : अवश्य ही मैं आपको अपने काम का सैम्पल दिखा सकता हूं। आप ज़रूर ही अप्रीशिएट[1] कीजिएगा। आप तो उन लोगों के देश के काम देख चुके हैं। आप तमाम दुनिया का चक्कर लगा आए हैं।

हरेन : बाय द ग्रेस आफ गाड[2]—येस।

प्रीतीश : आप गाड क्यों कह रहे हैं? आपके अपने ही कारनामे कुछ···

हरेन : जानता हूं। यह है आजकल की थ्योरी। भगवान-वगवान कुछ नहीं, जो कुछ कर रहा है आदमी अपने-आप ही···

प्रीतीश : सर, यह सब घोर वामपंथियों का विश्वास हो सकता है···

हरेन : आप क्या दक्षिणपंथी हैं?

प्रीतीश : नहीं, कहने का मतलब है कि यंग एज[3] में हर कोई कम-बेश वाम मार्ग पर ही चलता है।

हरेन : बहुत ज़्यादा कनसर्वेटिज्म[4] भी मैं पसन्द नहीं करता।

प्रीतीश : नहीं, नहीं···नेचुरली[5]। तब हां, हम तो मोटे तौर से प्राइवेट एंटरप्राइज़[6] पर खड़े हैं।

हरेन बोस एकाएक प्रीतीश के बारे में उदासीन हो जाता है।

हरेन : ट्रेनों को बहुत बेहतरीन बना दिया है···समथिंग टू बि प्राउड आफ[7]···

---

१. प्रशंसा २. ईश्वर के आशीर्वाद से ३. जवानी
४. रूढ़िवादिता ५. स्वाभाविक है ६. उद्यम ७. गर्व का विषय

प्रीतीश समझ जाता है कि चारा डालने की उसकी चेष्टाएं व्यर्थ साबित हो रही हैं।

प्रीतीश : (शुष्क स्वर में) येस सर।

थर्डक्लास चेयर कार।

अगल-बगल की तीन सीटों पर अदिति, शेफाली और अजय बैठे हैं। अदिति खिड़की के पास बैठी है, उसके हाथ में एक बंगला पत्रिका खुली पड़ी है, उसमें अरिन्दम की जीवनी प्रकाशित हुई है। अदिति जीवनी पढ़कर शेफाली को पत्रिका वापस कर देती है।

शेफाली : पढ़ चुकी ?

अदिति : लगता है, भले आदमी को ज़्यादा स्ट्रगल[1] नहीं करना पड़ा है।

अजय : अब करना पड़ रहा है। इतने-इतने रुपयों को लेकर क्या करेगा, यह सोचकर तय करना भी तो स्ट्रगल है।

अदिति : दरअसल इसमें बहुत-कुछ लक[2] की बात है।

अजय : नाइनटी पर्सेंट।[3]

शेफाली के दिमाग में सहसा एक बुद्धि आती है। वह अदिति से कहती है :

शेफाली : ऐ—तुम एक काम करो—उससे तरह-तरह के सवाल पूछो और एक लेख लिख डालो···और उसे अपने मैग-ज़िन में छाप दो। देखना, फिर बिक्री कैसी होती है।

अजय : असली बात कह ही डालो न—कि आज की खबरों के पीछे कौन-सी घटना है, उसे तुम जानना चाहती हो।

---

१. संघर्ष
२. भाग्य
३. नब्बे प्रतिशत

शेफाली : (अदिति से) अच्छा, तुम्हीं बताओ, मैंने क्या फालतू बात कही है ?

अदिति : सोचा था, अपनी पत्रिका में सिनेमा की बातें नहीं छापूंगी।

शेफाली : यह सब तुम्हारी ज़्यादती है। उसे अनदेखा करने से आज-कल कहीं चल सकता है ?

अदिति : ग्राहिकाओं की चिट्ठी से, चल नहीं सकता, ऐसा तो लगता है।

शेफाली : फिर क्या ? जाओ।

अदिति असमंजस में है। जाने की इच्छा भी है लेकिन आत्म-सम्मान के बारे में भी सोच रही है।

शेफाली : इतना क्या सोच रही हो ?

अदिति : टास करके देखूं।

अजय जेब से एक अठन्नी निकालकर अदिति की ओर बढ़ाता है।

अदिति : आप ही करें। 'हेड' होगा तो जाऊंगी।

अजय टास करता है। हेड। अन्ततः अदिति उठकर जाती है।

डाइनिंग कार।

अरिन्दम फाइल खोलकर चलचित्र नाट्य पढ़ रहा है। अदिति उसके सामने आकर खड़ी होती है। अरिन्दम सिर उठाता है।

अरिन्दम : अबकी क्या ? मौसेरी बहन ?

अदिति : सोच रही हूं अबकी आपको ज़रा विरक्त करूं।

अरिन्दम : विरक्त !

अदिति : अवश्य ही आप न चाहें तो रिफ़्यूज कर सकते हैं।

अरिन्दम : विरक्त होने से आपत्ति करूं ?

अदिति : नहीं, कहने का मतलव है कि आपसे कुछ सवाल करना चाहती हूं ।

अरिन्दम : लो हुआ, आप क्या पत्रकार हैं जनाव ?

अदिति अपने वैग से 'आधुनिका' निकालकर अरिन्दम को देती है ।

अदिति : हम लोग महिलाओं के लिए एक पत्रिका निकालते हैं ।

अरिन्दम : 'आधुनिका'··· वैठिए ।

अदिति वैठ जाती है । अरिन्दम पत्रिका को उलट-पुलटकर देखता है ।

अरिन्दम : अवश्य ही फिल्मी नहीं है ?

अदिति : आपसे इण्टरव्यू लेकर उस कमी को पूरा करना चाहती हूं । आप जवकि मिल गए हैं···

अरिन्दम अदिति की ओर देखता है ।

अरिन्दम : मिल गया हूं ?

अदिति : मतलव यह कि आप आसपास ही हैं । और सव कहने में हर्ज ही क्या, लोकप्रियता की दृष्टि से आप ही सवसे आगे हैं ।

अरिन्दम : देखिए, मेरी जीवनी इतनी जगहों में इतनी वार निकल चुकी है कि आपके जैसे दो-चार वाकी वचे व्यक्तियों के अलावा सभीको मालूम है । इसलिए···

अदिति : उन्हें जितना मालूम है, उतना संभवतः मैं भी जानती हूं ।

अरिन्दम : यह वात ?

अदिति : हां । यही जैसे—वचपन में ही आपके मां-वाप विदा हो चुके हैं, आपके चाचा ने आपका लालन-पालन किया है, वंगवासी कालेज में आपकी शिक्षा-दीक्षा हुई है, कुछ दिनों तक आपने एक दफ्तर में काम किया है, उसके वाद सत्ता-

ईस साल की उम्र में पहली तसवीर···उसके कारण आपका नाम फैला, उसके बाद आप जल्दी-जल्दी तरक्की करते गए, रुपया-पैसा, घर, गाड़ी और···

अरिन्दम : और क्या ?

अदिति : और आपने अब तक शादी नहीं की है।

अरिन्दम : आप भी तो बैचलर[1] मालूम होती हैं। या हो सकता है कि आधुनिकाएं मांग में सिंदूर नहीं लगाती हैं ?

अदिति : नहीं। बैचलर ।···लेकिन यह सब लिखना इन्ट्रेस्टिंग[2] नहीं होगा।

अरिन्दम : यह बात ? फिर आपकी समझ में इन्ट्रेस्टिंग क्या है ?

अदिति : यही जैसे—जो प्रश्न हमेशा याद रहता है···आपको जो इतनी ख्याति प्राप्त हुई है, आपको कैसा लगता है ?

अरिन्दम : बुरा नहीं। अच्छा ही। बहुत अच्छा।

अदिति : लेकिन यह तो इतनी-इतनी उपलब्धियां···इसमें कहीं कोई दरार नहीं ? किसी तरह का अभावबोध नहीं ? रिग्रेट्स[3] नहीं ?

अरिन्दम कुछ क्षणों तक अदिति की ओर अपलक ताकता है।

अरिन्दम : यह सब जानकर क्या होगा ? अयं ?

अदिति हतप्रभ हो जाती है। क्या कहे, समझ में नहीं आता।

अरिन्दम : यह सब कहने से हमारा मार्केट अगर बर्बाद हो जाए तो ? इसके लिए आप ज़िम्मेदार होंगी ? देखिए मिस···(अरिन्दम पत्रिका की जिल्द से संपादिका का नाम देख लेता

---

१. अविवाहित २. रोचक

३. पछतावा

है)···मिस सेनगुप्ता, हम लोगों को ज़्यादा नहीं बोलना चाहिए। हम लोग छायालोक में विचरण करते हैं न, इसलिए हमें अपने रक्त-मांस के जीवित चेहरे को आम लोगों के बीच नहीं रखना चाहिए। समझ रही हैं न ?

अदिति खामोश है।

अरिन्दम : कुछ भी समझ में नहीं आया ?

अदिति : शायद समझ में आ गया। आम लोगों के बीच आप नायक ही बनकर रहना चाहते हैं।

अरिन्दम : इग्ज़ैक्टली।[1]

अदिति : फिर···

अरिन्दम : अब फिर-विर नहीं।

अदिति : फिर चलूं।

अदिति 'आधुनिका' लेकर उठ जाती है।

अरिन्दम : ठहरिए भाई—कम से कम एक कोल्डड्रिंक्स तो आफर करने दें—नहीं तो चट से लिख डालिएगा कि अरिन्दम मुखर्जी मैनर्स[2] नहीं जानता।

अदिति : इससे भी आपका मार्केट खराब होने का भय है ?

अरिन्दम : ज़रूर। आप तो इस लाइन के बारे में कुछ भी नहीं जानतीं···सिर्फ ठंडे घर में बैठकर तसवीर देखती हैं और बाहर आकर कहती हैं रबिश—यही न ?

अदिति : हां, यही। तब हां, यह नहीं जानती थी कि आपका मार्केट इतना क्षणभंगुर है। ऐसा जानती तो फिर सवाल ही नहीं करने आती।

अरिन्दम : आप जीवन में उन्नति कीजिएगा।

अदिति : इच्छा तो है। तब हां, हमें उन्नति करने के लिए परिश्रम

---

१. तथ्यत: २. तौर-तरीका

करना होगा।

अरिन्दम : और हम लोगों को ? रुई के गद्दे पर आराम से बैठे-बैठे उन्नति करेंगे—यही न ?

अदिति : हो सकता है, यही। कुछ भी नहीं जानती।···अच्छा चलूं।

अरिन्दम : कोल्ड ड्रिंक···?

अदिति : नहीं। धन्यवाद।

अदिति चली जाती है। अरिन्दम बिल चुकाने के लिए बेयरा को आवाज़ देता है।

थर्डक्लास चेयरकार।

अदिति दूसरे-दूसरे यात्रियों के बीच से रास्ता बनाती हुई अपनी जगह पर आकर बैठती है। शेफाली समाचार जानने के लिए उत्कंठित है।

शेफाली : कुछ कहा ?

अदिति : न:।

शेफाली : सो क्या ? क्यों ?

अदिति : जानती हैं, ये लोग किस कोटि के हैं ? एक तरह का पौधा होता है···कांच के घर में बड़े ही जतन के साथ उसे हवा और रोशनी से बचाकर रखना पड़ता है—ये लोग उसी कोटि के हैं।

अजय तिरछी निगाहों से अपनी पत्नी की ओर ताकता है।

अजय : हो गया न ?

अदिति अपना बैग खोलकर प्रूफ निकालती है।

कारीडोर ।

अरिन्दम हाथ में फाइल लिए डाईनिंग कार से वापस आ रहा है। रीटा खिड़की के पास खड़ी-खड़ी बाहर के दृश्यों को देख रही हैं। अरिन्दम उसके निकट जाकर खड़ा होता है।

अरिन्दम : तुम्हारा नाम क्या है ?

रीटा : रीटा। और तुम्हारा ?

अरिन्दम : अरिन्दम मुखर्जी।

कंडक्टर गार्ड उपेन बाबू अरिन्दम की ओर आता है।

उपेन : अघोर चाटुर्या जी आपको याद कर रहे हैं।

अरिन्दम : फिर ? क्यों ?

उपेन : आपके बारे में अखबार में कुछ छपा है न ?

अरिन्दम का चेहरा बुझ जाता है।

अरिन्दम : क्या छपा है ?

उपेन : आपके प्राइज़ का समाचार।

अरिन्दम : ओ। ठीक है, चलिए।

एक कमरा।

'स्टेट्समैन' पत्रिका हाथ में थामे अघोर बैठे हैं। अरिन्दम दरवाज़े के बाहर आकर खड़ा होता है। उपेन उसे पहुंचाकर चल देता है।

अघोर : आप प्राइज़ लेने दिल्ली जा रहे हैं ?

अरिन्दम : आप देखिए। अखबार में जो कुछ निकलता है आप उसपर विश्वास कर लेते हैं ?

अघोर : इट्'स ए ग्रेट आनर[1]। अन्दर आइए न।

---

१. यह बड़े सम्मान की बात है।

अरिन्दम : आऊं ? डर लगता है ?

अघोर : डर किस बात का ?

अरिन्दम अन्दर जाकर अघोर की बगल में बैठता है।

अरिन्दम : हम लोगों में बहुत तरह के वाइसेस[1] रहते हैं—अगर इन्फेक्शन[2] वगैरह···

अघोर : इट इज़ नेवर टू लेट टु रिफार्म[3]···पेप्स लीजिएगा ?

अघोर पेप्स की शीशी अरिन्दम की ओर बढ़ाते हैं।

अरिन्दम हाथ जोड़कर अस्वीकार करता है।

अघोर : आपके फैमिली है ?

अरिन्दम : जी ?

अघोर : आप विवाहित हैं ?

अरिन्दम : आप वैधानिक विवाह के बारे में पूछ रहे हैं ?

अघोर धमकाने के स्वर में पूछते हैं।

अघोर : वाट अदर काइंड्स आफ मैरिज इज़ देअर इन सिविलाइज़्ड सोसाइटी[4] ?

अरिन्दम : नहीं···फिर मैं बेचलर हूं।

अघोर : आप शराब क्यों पीते हैं ? उससे क्या होता है ?

अरिन्दम : जो शराब नहीं पीते, उन्हें कैसे समझाऊं बाबा। मेरे पास भाषा नहीं है। कहिए तो अभिनय करके बता दूं।

अघोर : देखो जी, यंग मैन—नीतिज्ञान के बिना कोई भी राष्ट्र बड़ा नहीं हो सकता। खास तौर से भारतवर्ष में, आज के युग में इसकी सख्त ज़रूरत है।

अरिन्दम : बाप रे बाप।···मैं चलूं बाबा, मेरे इंजेक्शन का समय हो चुका है।

---

१. पाप २. छूआछूत ३. सुधार हर वक्त किया जा सकता है।

४. सभ्य समाज में विवाह की और कौन-सी किस्म होती है ?

अरिन्दम उठकर दरवाज़े की ओर बढ़ता है।

अघोर : इंजेक्शन ?

अरिन्दम : कोकेन, कोकेन।

अरिन्दम चला जाता है। अघोर हतप्रभ हो जाते हैं।

डी कमरा।

मनोरमा चम्मच से बुलबुल की ओर दवा बढ़ाती है। बुलबुल पीने में आपत्ति करती है।

मनोरमा : पी ले, मेरी अच्छी बिटिया।

अरिन्दम का प्रवेश। अपने हीरो पर निगाह पड़ते ही बुलबुल एक ही घूंट में दवा पी जाती है। अरिन्दम तकिया रखकर अपनी जगह पर लेट जाता है।

मनोरमा दवा की शीशी बक्से में रखकर अपनी जगह पर बैठती है और अरिन्दम पर आंखें टिका देती है।

मनोरमा : आपको इतने निकट से देख पाऊंगी, यह सोचा भी नहीं था। एक दिन आपको न्यू मार्केट में देखा था। शायद आप शर्ट खरीद रहे थे।

अरिन्दम : हो सकता है।

मां और बेटी दोनों अरिन्दम की ओर निहार रही हैं। लगता है, मां की भक्ति लड़की की भक्ति से किसी अंश में कम नहीं है।

मनोरमा : आप लोगों को ज़रूर ही राह-बाट में चलने में असुविधा उठानी पड़ती होगी।

अरिन्दम जैसे सौजन्य की खातिर ही सवालों का जवाब दिये जा रहा है। बातचीत करने की कोई इच्छा है, ऐसा नहीं लगता।

अरिन्दम : हां, थोड़ी-बहुत तो उठानी पड़ती ही है···

अरिन्दम सिगरेट सुलगाकर चलचित्र नाट्य में तल्लीन हो जाता है। बुलबुल वंक से सिर निकालकर, होंठों पर उंगली रखकर बोलने से मना करती है। मनोरमा अन्ततः चुप हो जाती है।

डाइनिंग कार।

प्रीतीश और हरेन अब भी कोकाकोला सामने लिए उसी जगह बैठे हैं। प्रीतीश चारा डालने की अथक चेष्टा कर रहा है, लेकिन अब तक उसे सफलता नहीं मिली है, यह बात सहज ही समझ में आ जाती है।

हरेन : आप लोग यहां क्या कर पाइएगा? वैसा इमेजिनेशन[1] कहां है? विलायत में एक-एक विंडो पर घंटों तक खड़ा रहना पड़ता है।

प्रीतीश : मगर सर—बात ऐसी नहीं है कि हम लोग नहीं कर सकते। अच्छे काम को कितने आदमी पसन्द करते हैं? कितने आदमी समझ पाते हैं? आप जैसे अच्छे क्लाइण्ट[2] हमें मिले···

डाइनिंग कार के दरवाजे से माली का प्रवेश। वह इधर-उधर ताककर प्रीतीश की मेज़ की ओर बढ़ती है।

हरेन : मैं लेकिन इन मामलों में बहुत ज़्यादा पेसिमिस[3]···

हरेन वाक्य समाप्त नहीं कर पाता है। उसकी आंखें माली पर जाती हैं। वह प्रीतीश के पीछे आकर खड़ी

---

१. कल्पना २. मुवक्किल

३. निराशावादी

है । प्रीतीश माली को देखकर खड़ा हो जाता है, हरेन से उसका परिचय कराता है ।

प्रीतीश : आप मिस्टर वोस···और आप मेरी पत्नी···

हरेन के चेहरे पर मुसकराहट उभर आती है ।

हरेन : वैठिए ।

माली हरेन की बगल में वैठती है ।

प्रीतीश : क्या लोगी माली ?

माली हाथ से कोकाकोला की ओर इशारा करती है । डाईनिग कार का कर्मचारी पीछे की तरफ आकर खड़ा होता है, प्रीतोश उसे कोकाकोला लाने को कहता है ।

हरेन : आप अपने पति के कामों में मदद करती हैं ?

माली के कुछ कहने के पहले ही प्रीतीश उत्तर देता है ।

प्रीतीश : शी इज़ द परफ़ेक्ट हाउसवाइफ ।[1]

हरेन : आजकल तो यंग लड़कियां भी ये सब लाइन स्वीकार रही हैं । आइ थिंक इट इज़ ए गुड थिंग[2], क्योंकि मैं इस वात पर विश्वास करता हूं कि औरतों में एक तरह का स्वाभाविक सौंदर्यवोध रहता है, उसे विज्ञापन के मामले में अमल में लाया जा सकता है । हैव यू थाट आफ दैट, मिस्टर सरकार ?[3]

प्रीतीश हरेन वोस की बदलती मनस्थिति को भांप लेता है । चारा डालने का काम क्या अंततः माली के द्वारा ही संभव होगा ।

प्रीतीश : नहीं, उस तरह से ठीक···

हरेन : (माली से) आपको नौकरी करने की इच्छा नहीं

---

१. यह पूर्णतया गृहिणी है ।
२. मैं सोचता हू, यह अच्छी चीज है ।
३. आपने इसके बारे में सोचा है मिस्टर सरकार ?

होती ?

माली : होती है।

हरेन : लेकिन पति से कहने की हिम्मत नहीं होती ?

माली मुस्कराती है। प्रीतीश तिरछी निगाहों से हरेन का हावभाव ध्यानपूर्वक देख रहा है।

हरेन : बंगाली लड़कियां आजकल बंदूक चलाती हैं, एअरप्लेन चलाती हैं, माउन्टिनिअरिंग[1] करती हैं और मामूली विज्ञापन के आफिस में काम नहीं कर पाएंगी ? अयं, कहिए, अयं ?

बी कमरा।

गेरुआधारी स्वामी जी अभी कमरे में अकेले हैं। वे अपनी जगह पर लेटे-लेटे बाईं ओर रखी छड़ी से दूसरी ओर माली के बर्थ पर रखी मैगज़िन की जिल्द ऊपर उठाकर देख लेते हैं। पत्रिका का नाम है—'ट्रू रोमान्सेज़'।

डी कमरा।

अरिन्दम लेटे-लेटे चलचित्र नाट्य पढ़ रहा है। सिगरेट से कस लेकर वह धुएं के दो गुबारे बाहर निकालता है। गुबारे तैरते हुए बुलबुल के चेहरे के सामने पहुंचते हैं। बुलबुल उन्हें फूंककर उड़ा देती है।

बुलबुल के नीचे बैठी मनोरमा तिरछी निगाहों से अरिन्दम की ओर ताक रही है। हैंडबैग से छोटा-सा एक

---

१. पर्वतारोहण

आईना वाहर निकालकर मनोरमा अपना चेहरा देखती है। और देखकर एक लंवी सांस छोड़ती है।
दिल्ली जाने वाली वेस्टिव्यूल ट्रेन वंगाल के धान के खेतों के वीच से भागती चली जा रही है।

डी कमरा।
अरिन्दम नींद में खो गया है। हम उसके चेहरे की ओर वढ़ें। अरिन्दम की भौंहें सिकुड़ी हुई हैं। वह सपना देख रहा है।

अरिन्दम का सपना :
आकाश से हज़ार-हज़ार रुपये के नोट गिर रहे हैं, जिधर भी आंखें जाती हैं, हज़ार रुपये के नोटों का स्तूप दिखता है, अरिन्दम उनके वीच हाथ फैलाए खड़ा है। उसकी भंगिमा देखने से पता चल जाता है कि उसके जैसा सुखी कोई नहीं है। नोटों के टीले पर वह वच्चे की तरह दौड़ लगा रहा है, मुट्ठियों में नोटों को भरता है और फिर चारों ओर विखेर देता है।
एकाएक अंधेरा उतर आता है।

अरिन्दम नोटों के एक टीले पर खड़ा है। चारों ओर शाम उतर आती है। अरिन्दम संत्रस्त भाव से चारों ओर आंखें दौड़ाता है। एकाएक क्या घटित होता है, उसकी समझ में नहीं आता। टीले से वह नीचे उतरता है। अंधकार गहरा हो जाता है। कहीं टेलीफोन की घंटी वज रही है। एक नहीं अनेकों।

अरिन्दम पागल की तरह दौड़ने लगता है।

सहसा एक भयावह दृश्य देखकर वह ठिठक जाता है— रुपयों के स्तूप पर एक कंकाल हाथ उठाए खड़ा है। उस हाथ में टेलीफोन थमा है।

अब अरिन्दम को टीले के अन्दर से कंकाल का हाथ बाहर निकला हुआ दीख पड़ता है, उसके अनेक हाथों में टेलीफोन हैं। तमाम टेलीफोन एकसाथ घनघना रहे हैं।

अरिन्दम इस दृश्य को अब देख नहीं पाता है। वह फिर से दौड़ने के लिए पैर बढ़ाता है। लेकिन अब की उसके पांव एक खड्ड में पड़ जाते हैं।

अरिन्दम जी-जान से अपने-आपको बचाने की चेष्टा करता है।

एक आदमी उसकी रक्षा कर सकता है। यात्रा की राज-पोशाक में एक व्यक्ति दीख पड़ता है। वह कुल मिलाकर चिता से उठकर आया है। आदमी अरिन्दम की ओर आता है। मरणोन्मुख अरिन्दम असहाय की तरह उसकी ओर बढ़ता है···

अरिन्दम : शंकरदा। बचाइए···शंकरदा।

आदमी आगे आकर हाथ बढ़ाता है। अरिन्दम उसका हाथ पकड़ना चाहता है। आदमी अचानक निर्ममता के साथ अपना हाथ हटा लेता है, फलस्वरूप तीव्र आर्तनाद करता हुआ अरिन्दम अतल में समा जाता है···

डी कमरा।

पसीने से लथपथ अरिन्दम की नींद टूटती है। वह उठकर बैठता है और हांफने लगता है। मनोरमा बेचैन हो उठती

है।

मनोरमा : क्या हुआ ?

अरिन्दम : कुछ नहीं···

अरिन्दम उठकर कमरे से बाहर चला जाता है।

कारीडोर।

अरिन्दम कमरे से बाहर चला जाता है। दुःस्वप्न की परछाईं अब भी दूर नहीं हुई है। वह खिड़की के पास जाकर हांफने लगता है।

अघोर चाटुर्ज्या अरिन्दम की बगल से होते हुए बाथरूम की ओर जाते हैं। पीछे की तरफ, कारीडोर के परले सिरे में, डाईनिंग कार से लौटती माली बी कमरे के अन्दर जाती हुई दीखती है।

बी कमरा।

माली अपनी जगह पर लौट आई है। चेहरे पर गंभीरता लिए वह खिड़की से बाहर की ओर ताक रही है। प्रीतीश उसके पीछे की तरफ आकर खड़ा हो जाता है।

प्रीतीश : तुम चली क्यों आयीं ?

माली : यों ही।

प्रीतीश : यों ही ? कोई बातचीत नहीं की और चली आयीं ?

माली : क्यों चली आयी, यह बात तुम नहीं जानते ?

प्रीतीश : क्यों ?

माली : भले आदमी के देखने की भंगिमा को तुमने गौर किया ?

प्रीतीश : उफ ! इस मामूली कारण से तुम···भले आदमी ने तुम्हें

पसन्द किया है, यह क्या बुरा है ?

माली कोई उत्तर नहीं देती। उसके अन्दर एक दबा हुआ क्षोभ है, यह स्पष्ट प्रतीत होता है।

प्रीतीश : बाज़ी आलमोस्ट[1] मात हो गयी है माली—सिर्फ तुम्हारी सहायता चाहिए।

माली : सहायता ?

प्रीतीश : तुमने सुना नहीं, दिल्ली का पता बता गए, आकर चाय पीने को कहा।

माली : इससे क्या ?

प्रीतीश माली के बिल्कुल निकट चला आता है, उसकी आवाज़ और अधिक मद्धिम हो जाती है।

प्रीतीश : वह क्या है, समझती हो ?

माली : नहीं, समझा दो।

प्रीतीश : तुम तो स्टेज पर एक्टिंग कर चुकी हो—अब तुम्हें यथार्थ जीवन में करनी है।

माली : एक्टिंग ?

प्रीतीश : आल यू हैव टु डू इज़ बी ए लिटल नाइस टू हिम[2]। ज़रा निकट जाकर बैठो, ज़रा मीठी-मीठी बातें करो··· समझ रही हो।

माली बड़ी कठिनाई से अपनी उत्तेजना दबाए हुए है।

निकट ही स्वामीजी हैं अन्यथा खुलकर दाम्पत्य-कलह का सूत्रपात हो जाता, इसमें कोई संदेह नहीं।

प्रीतीश : अपने पति के लिए तुम इतना भी नहीं कर सकतीं ? तुमने मुझे गलत समझा है माली। मुझे माली···फार

---

१. करीब-करीब २. तुम्हें ज़रा उसके प्रति थोड़ी सहृदयता दिखाना है बस !

हेवन'स सेक[1], प्लीज़ !

माली : मैंने ठीक ही समझा है ।

प्रीतीश : इसे सिरियसली[2] लेना कोई ज़रूरी नहीं है माली, यह तो एक खेल है, एक स्ट्रैटिजि[3] है, एक···

माली : मैंने ठीक ही समझा है ।

माली सीट से उठकर प्रीतीश की बगल से होती हुई आंधी की तरह कमरे से बाहर चली जाती है ।

प्रीतीश : यह क्या···कहां चलीं ?

प्रीतीश उसके पीछे-पीछे भागता है ।

बगल की सीट पर स्वामी जी अब तक कपट-निद्रा में निमग्न थे । उनकी अधमुंदी आंखों से पता चल जाता है कि उन्होंने सब कुछ सुन लिया है ।

बाथरूम ।

माली अन्दर जाकर धड़ाम से दरवाज़ा बन्द कर देती है । प्रीतीश आकर दरवाज़ा खटखटाता है ।

प्रीतीश : माली ! माली ! सुनती हो···माली ।

दूसरी दिशा के बाथरूम का दरवाज़ा खोलकर अघोर चाटुर्ज्या बाहर निकलते हैं । प्रीतीश हतप्रभ हो जाता है । अघोर की ओर देखता हुआ वह बेवकूफ की तरह हंस देता है । अघोर के चले जाने के बाद वह फिर से दरवाज़ा खटखटाने लगता है ।

गाड़ी एक छोटे स्टेशन पर आकर रुकती है । यहां रुकने की बात नहीं है, अनुमान लगाया जा सकता है कि लाइन

---

१. खुदा के लिए २. गम्भीरता से ३. कूटनीति

क्लिअर नहीं है।
अरिन्दम अब तक कॉरीडोर में खड़ा था, अब वह प्लेट-फार्म पर उतरता है। चायवाले को पुकारकर एक कुल्हड़ चाय खरीदता है और उसे होठों से लगाता है। अब उसकी आंखें डाइनिंग कार की खिड़की की ओर जाती हैं। अदिति दीख पड़ती है। वह खिड़की के पास बैठी कागज़-पत्तर उलट-पुलट रही है। अदिति की आंखें अरिन्दम की आंखों से मिलती हैं। अरिन्दम अपने हाथ का कुल्हड़ अदिति को दिखाता है…भाव है : चाय लीजिएगा ? अदिति छुरी-चम्मच उठाकर दिखाती है। अरिन्दम मुस्कराता है। उसके बाद कुल्हड़ फेंककर वह फिर से ट्रेन के अन्दर चला आता है।
गाड़ी फिर से चलने लगती है।

डाइनिंग कार।
अभी लंच का वक्त है, यही वजह है कि डाइनिंग कार में काफी आदमी हैं। बेयरा का जत्था व्यस्तता के साथ इधर-उधर आ-जा रहा है। अरिन्दम आगे बढ़ता है। अदिति के सामने एक जगह खाली है। अरिन्दम उसी जगह पर बैठ जाता है।

अरिन्दम : आपके पास ही बैठना सेफ है, क्योंकि आपमें सिनेमा के प्रति कोई कौतूहल नहीं।
अदिति हंसती हुई प्रूफ बैग में रखती है।

अरिन्दम : आप तो बहुत-कुछ जानती हैं ? सपनों के संबंध में कोई जानकारी रखती हैं ?

अदिति : सपनों के संबंध में ?

अरिन्दम : हां···

अदिति : जानकारी का मतलब ? हर किसीको जितना मालूम है, उतना ही जानती हूं।

अरिन्दम : यानी ?

अदिति : यानी आपके सबकान्शस में जो सब है—जैसे भय या बिलीफ्स या आकांक्षा—ये तमाम चीजें बीच-बीच में सपने में प्रकट होती हैं। यही और क्या···

अरिन्दम चिन्ता की मुद्रा में सिर हिलाता है।

अदिति : आप इसी बीच नींद में खोकर सपना-वपना देख आए हैं क्या ?

अरिन्दम : (प्रायः स्वगत) देखा कि···रुपयों के एक बालूचर में धंस रहा हूं···और शंकरदा·· चाहते तो खींचकर मुझे बाहर निकाल सकते थे, लेकिन निकाला नहीं। और मैं —उफ् वीभत्स।

अदिति के सामने पैड खुला पड़ा है। पैड की बगल में कलम। अरिन्दम के अनमनेपन के मौके से लाभ उठाकर अदिति कलम खोलकर पैड पर लिखती है—'शंकरदा'।

अदिति : शंकरदा कौन ?

अरिन्दम : उंह ?

अदिति : शंकरदा कौन ? सगे-संबंधी हैं ?

अरिन्दम : नहीं। मुहल्ले के रिश्ते में बड़ा भाई। वे कहा करते थे : और चाहे जो करना है करो, सिनेमा में मत उतरो।

अदिति अरिन्दम के अनजाने नोट करती जा रही है।

अदिति : बड़े ही परम्परावादी थे ?

अरिन्दम : सिर्फ सिनेमा के मामले में। असल में उनका एक स्वार्थ जड़ित था ; हम लोगों का एक क्लब था, उसमें थियेटर होता था। वे उसके कर्णधार थे। बिलकुल हिटलर !—

—और हीरो का पार्ट मेरे लिए निश्चित था ।

अदिति : और आप अन्दर ही अन्दर सिनेमा में उतरने का मनसूबा वांध रहे थे ?

अरिन्दम : मुझे उकसाता था । ज्योति नाम का एक लड़का था—अव भी है—मेरा मैनेजर—उस पट्ठे का टालीगंज से एक तरह का कनेक्शन था । ज्योति एक वार एक अच्छा-सा आफर लेकर आया । देवी चौधरानी का । पिता का अभिनय करने वाले थे मुकुन्द लाहिड़ी । मुझे वस इसी वात का लोभ था । इधर पूजा निकट ही थी, हम लोगों का रिहर्सल चल रहा था और उसी बीच न जाने किसने शंकरदा के सामने भंडाफोड़ दिया । अव जाऊं तो कहां जाऊं ।

फ्लैश बैक (पूर्व दृश्य)

क्लव । मंच पर नाटक का पूर्वाभिनय चल रहा है, तभी आंधी की तरह शंकरदास का प्रवेश । बिना एक भी शब्द बोले वे सीधे मंच पर पहुंचकर ज्योति को एक तमाचा जड़कर धराशायी कर देते हैं ।

शंकर : क्या वात है ? तुम्हारा मकसद क्या है ? मेरा नाटक सेबॅटाज़[1] करने की साज़िश चल रही है ? तुम लोगों ने मुझे क्या समझा है ?

अरिन्दम मंच पर ही था, वह शंकरदा को शांत करने की चेष्टा करता है ।

अरिन्दम : आप व्यर्थ ही गुस्से में आ रहे हैं शंकरदा…

शंकर : व्यर्थ ही गुस्से में आ रहा हूं या नहीं—इसका विचार मैं

१. बेकार करना

करूंगा । तारक बनने की अभिलाषा जगी है या दुमदार धूमकेतु ?

अरिन्दम : आप सब कुछ सुन ही चुके हैं।

शंकर : तुम्हारे मुंह से नहीं सुना । आइ वान्ट इट फ्राम यू ।[१]

अरिन्दम : ज्योति फिल्म का एक आफर लाया है…

शंकर : कौन-सी तसवीर है ?

अरिन्दम : देवी चौधरानी।

शंकर : कौन-सा पार्ट ?

अरिन्दम : हीरो।

शंकर : ब्रजेश्वर का ? दैट नॉनएण्टीटी ?[२]

अरिन्दम : अभी तक कुछ तय नहीं हो पाया है। सिर्फ स्क्रीन टेस्ट लेना चाहता था…

शंकर : और तुमने क्या कहा ?

अरिन्दम : अभी तक कुछ भी नहीं बताया है ।

शंकर : मैं कह रहा हूं । नहीं होगा ।

अरिन्दम : आप कहिएगा तो नहीं ही होगा । लेकिन नाटक का बेड़ा गर्क कर फिल्म बनाने की बात मैं नहीं सोच रहा था ।

शंकर सिगरेट सुलगाते हैं । अब उनका आक्रोश बहुत-कुछ शांत हो गया है ।

शंकर : देखो अरिन्दम—फिल्म में एक प्रकार का ग्लैमर[३] है, यह बात मैं जानता हूं—लेकिन उससे आर्ट का किसी तरह का संबंध नहीं, और रह भी नहीं सकता । खास तौर से फिल्म के अभिनेता की कोई स्वतंत्र या सस्टेंड कान्ट्रिव्यूशन[४] नामक कोई चीज़ नहीं रह सकती है। मुझे इसकी

१. मैं तुमसे सुनना चाहता हूं।
२. आकाश-कुसुम
३. मोहकता
४. अविच्छिन्न योगदान

जानकारी है, वगैर जाने-सुने नहीं कह रहा हूं। ए फिल्म एक्टर इज़ ए पपेट[1]—पुतला। निर्देशक के हाथ का वह पुतला होता है, कैमरामैन के हाथ का पुतला और जो कैंची से तसवीर कतरते हैं और कतरकर जोड़ते हैं—उनके भी हाथ का पुतला। और एक बात···

शंकर अरिन्दम के पास आकर बैठते हैं।

शंकर : मंच के अभिनेताओं के लिए जो असली प्रेरणा का स्रोत है वह है फूटलाइट के सामने दो काले-काले सिर दिखाई पड़ते हैं, जिनसे एनर्जी हासिल होती है, उत्साह पैदा होता है—उसकी अगर उपेक्षा कर दी जाए तो एक्टिंग में जो असली थ्रिल[2] है—वह रह ही कहां पाता है? फिल्म में वह चीज़ कहां है? तुम्हें मोह किस बात का है—रुपये-पैसे का? तुम्हें सक्सेस[3] नहीं मिल सकता, यह मैं नहीं कहता। तुम्हारे पास शक्ल-सूरत है, वॉयस[4] है, हो भी सकता है। मगर एक बात तुम्हें बता दूं—फिल्म का जो एक व्याव-सायिक पहलू है, वह वेहद गंदा है। वहां सिर्फ सप्लाई-डिमांड का खेल चलता है। अगर तुम्हारी दो तसवीरें एक के बाद दूसरी चल जाती हैं तो तुम दनादन आगे बढ़ जाओगे। उसके बाद अगर तुम्हारी तीसरी और फिर चौथी मार खा जाती है तो तुम देखोगे कि जिस नसैनी के सहारे तुम ऊपर पहुंचे हो—उसे कोई हटाकर ले गया है। उसके बाद तुम्हें धक्का लगेगा। तुम इस तरह मुंह के बल गिरोगे कि फिर उठ नहीं पाओगे। तुम पूरे तौर से फिनिश्ड फार आल टाइम।[5]

पूर्वदृश्य समाप्त

---

१. चलचित्र का अभिनेता एक कठपुतला होता है। २. स्पन्दन
३. सफलता ४. स्वर ५. हमेशा के लिए समाप्त

हम लोग पुनः डाइनिंग कार में लौट आए हैं। अरिन्दम और अदिति एक ही स्थान पर बैठे हैं। अदिति के सामने खुला पैड है, वह धड़ाधड़ लिखे जा रही है।

अरिन्दम : यह हुई शंकरदा की बातें। बातें बिलकुल गलत कही थीं ऐसा नहीं…

अदिति : मगर आपके बारे में यह सही नहीं उतरता है।

अरिन्दम की आंखों में अब भी उदासी तैर रही है। वह व्यतीत के संदर्भ में सोच रहा है।

अरिन्दम : अष्टमी के दिन थियेटर हुआ। उसके दो दिनों के बाद विजया दशमी थी—देवी का विसर्जन होना था। हमारी प्रतिमा पुराने ढंग की थी। शंकरदा का कहना था—पट-मुकुट और डबडबायी आंखें न हों तो भक्ति पैदा होती ही नहीं। उसी देवी का विसर्जन होने जा रहा था…

पूर्वदृश्य

दुर्गा की प्रतिमा कंधे पर रखी जा रही है। शंकर, अरिन्दम, ज्योति—सभी दीख पड़ते हैं। ऊपर उठाते ही प्रतिमा अचानक एक ओर झुक जाती है। चारों तरफ हो-हल्ला, शोर-गुल। शंकर का कंधा पटरे से अचानक अलग हो जाता है। शंकर ज़मीन पर गिर पड़ता है। 'क्या हुआ, क्या हुआ' की आवाज़ गूंजने लगती है। अरिन्दम शंकर पर पछाड़ खाकर गिर पड़ता है। शंकर का चश्मा छिटककर अलग हो गया है, उसकी आंखें बंद हैं, देह अचल।

अरिन्दम : शंकरदा! शंकरदा!…

एक आदमी : चल बसा…

इस दृश्य के साथ अरिन्दम के शब्द सुनायी पड़ते हैं। वह अदिति के समक्ष विवरण प्रस्तुत कर रहा है।

अरिन्दम : (नेपथ्य से) उतना बड़ा जवान आदमी आंखों के सामने ही विदा हो गया। थ्रम्बोसिस ! ···

शंकर का शव श्मशान की ओर ले जाया जा रहा है। अरिन्दम ने कंधा लगाया है। वह आंखों से आंसू पोंछता हुआ दीख रहा है।

अरिन्दम : (नेपथ्य में) बचपन में माता-पिता की मृत्यु होते देखा है, बहुत-से अपने-परायों के शव कंधे पर ढोये हैं। मृत्यु के बारे में एक तरह का कैलस[1] भाव पैदा हो गया था। लेकिन शंकर दा की मृत्यु को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं कर पा रहा था। जिसमें इतनी लाइफ[2] थी, उसके प्राण इस तरह एकाएक कैसे निकल गए ?

श्मशान में चिता जल रही है। अरिन्दम आग की लपटों की ओर अनिमेष ताकता हुआ सिगरेट पी रहा है।

अरिन्दम : (नेपथ्य में) लेकिन, जानती हैं, आश्चर्य क्यों हुआ ? शव जब जल रहा था, मैंने फ़ील[3] किया कि मन के भीतर एक प्रकार का दूसरा ही भाव पैदा हो रहा है। एक परिवर्तन आ रहा है। ज्योति निकट ही था, उसे बुलाया।

अरिन्दम : ज्योति···

ज्योति आकर अरिन्दम के पास बैठता है।

ज्योति : कहो···

अरिन्दम : तुम अगले जन्म में विश्वास करते हो ?

ज्योति : किसके अगले जन्म में ?

अरिन्दम : मनुष्य के···तुम्हारे···

ज्योति हंसता है।

ज्योति : मैं जो मैं हूं—यह बात मैं अगले जन्म में कैसे जानूंगा ?

---

१. निष्ठुर २. जीवन-शक्ति ३. महसूस

ज्योति बनर्जी ज्योति बनर्जी बनकर पैदा नहीं होने जा रहा है। और हर कोई जातिस्मर[1] भी नहीं होता। फिर विश्वास-अविश्वास का प्रश्न ही कहां पैदा होता है ?

अरिन्दम : तुम जो कह रहे हो···

ज्योति : मार्क्स और फ्रायड का युग है, भाई मेरे—नो परजन्म, नो प्राव-इडॅन्स[2]।

अरिन्दम : जानता हूं। एक ही जीवन है, एक ही चांस।[3]

ज्योति : तुम क्या सोच रहे हो ?

अरिन्दम : अच्छा, तुम्हें क्या लगता है—कि फिल्म के जितने एक्टर हैं, सबके सब पुतले हैं ? ब्रांडो, बोगार्ट, पॉलमुनि—ये लोग सभी पुतले हैं ?

ज्योति : अरे भाई मेरे। आदमी होकर तो महीने में दो सौ तीस रुपये कमाते हो, साल में दस रुपये का इनक्रिमॅन्ट[4]··· उसके बजाय अगर एक सक्सेसफुल[5] पुतला हो सके तो 'पर पिक्चर' हंस-खेल कर तीस हज़ार रुपये मिलेंगे।

अरिन्दम अब भी जलती चिता की ओर अपलक ताक रहा है। वह गहरी चिन्ता में तल्लीन है।

ज्योति : दो युवकों का टेस्ट लिया गया है—वे कामयाब नहीं हुए।

अरिन्दम : शंकरदा मस्ट बी रांग[6]—है न यह बात ? मस्ट बी रांग···

ज्योति : तुम राज़ी हो जाओ तो मेरी इज़्ज़त बच जाए।

अरिन्दम : सत्ययुग होता तो डरता···

ज्योति : मतलब ? डर किस बात का ?

अरिन्दम अपने हाथ का सिगरेट चिता की अग्नि में फेंक देता है।

---

१. पूर्व जन्म की बात जानने वाला २. विधाता ३. अवसर
४. वेतन-वृद्धि ५. कामयाब ६. निश्चय ही भ्रांति में थे।

अरिन्दम : शंकरदा के अभिशाप का।

पूर्वदृश्य समाप्त

डाइनिंग कार।

अरिन्दम : मैंने डिसाइड कर लिया—ऑन द स्पॉट।[1]

अरिन्दम अदिति की ओर देखता है। अदिति अब बहुत कुछ सहज हो गयी है। अरिन्दम की कहानी उसका हृदय उद्वेलित करने लगी है, इसका अनुमान सहज ही लग जाता है।

अरिन्दम : आपको बहुत ही आश्चर्य हो रहा है ?

अदिति : क्यों ?

अरिन्दम : उनके मरते न मरते···इस तरह···

अदिति : यही स्वाभाविक है।

अरिन्दम मुस्कराता है।

अरिन्दम : बंगला तसवीरों में इसीका अभाव है, आप यही कहना चाहती हैं न ?

अदिति हंसती है, किसी भी प्रकार की राय ज़ाहिर नहीं करती। दोनों खिड़की के बाहर की ओर ताकते हैं। किसी बड़े स्टेशन के आने का संकेत मिल रहा है।

अरिन्दम : वर्धमान।···अब कुछ खाना चाहिए। बेयरा !

बेयरा अरिन्दम की मेज़ के पास आकर खड़ा होता है। अरिन्दम और अदिति लंच का आदेश देते हैं। बेयरा चला जाता है। गाड़ी वर्धमान स्टेशन पर रुकती है। अदिति को एक प्रकार की जडता दबोच लेती है। प्लेटफार्म के दो-चार युवकों ने इस बीच अरिन्दम को पहचान

---

१. उसी जगह तय कर लिया।

लिया है। वे खिड़की के पास आकर खड़े होते हैं।

अदिति : मेरा यहां रहना संभवतः ठीक नहीं है।

अरिन्दम इस प्रकार की स्थितियों से अभ्यस्त हो चुका है। वह किसी भी हालत में विचलित नहीं होता, बल्कि अदिति की बेचैनी का खुलकर उपभोग करता है।

अदिति : यह देखिए—आपको पहचान लिया। इस्स!···

खिड़की के बाहर अब काफी लोगों का मजमा जमा हो गया है। कुछ लोग खिड़की के कांच पर दस्तक दे रहे हैं, अरिन्दम की ओर ताकते हुए हाथ हिला रहे हैं।

अदिति : यह देखिए!—इस्स—छिः छिः छिः···

अरिन्दम : ऐसा होना बिलकुल अस्वाभाविक है क्या?

अदिति खिड़की के परदे को उतारकर हुक से टिका देती है, लेकिन परदा फिर अपने-आप हट जाता है और अदिति शोचनीय स्थिति में पड़ जाती है।

अरिन्दम : आज उन लोगों का रेड लेटर डे[1] है—यह बात आपको मालूम है?

अदिति : मालूम तो है···लेकिन मैं अभ्यस्त नहीं हूं।

अरिन्दम थोड़ा-बहुत रगड़ करने का लोभ संभाल नहीं पाता है।

अरिन्दम : जानती हैं, वे लोग क्या सोच रहे हैं?

अदिति : क्या?

अरिन्दम : मैं शूटिंग करने जा रहा हूं और आप मेरी हिरोइन हैं।

अदिति : धत्त···क्या जो कह रहे हैं।

अरिन्दम : मेरी कम्पनी[2] आपके लिए इतनी लज्जास्पद है?

अदिति हाथों से अपना मुंह ढकने का प्रयास करती है।

---

१. स्वर्ण दिन

२. संगति

अरिन्दम : हाथ हटा लें, हटा लें, इससे उन लोगों को और बढ़ावा मिलेगा। पूरे तौर से रिलैक्स करें, स्वाभाविक तौर पर बातचीत करें।

अदिति बेहद परेशान है। इस बीच भीड़ और ज्यादा बढ़ गयी है।

अदिति : असंभव !

अरिन्दम : फिर मैं कहूं ?

अदिति : कहिए।

अरिन्दम : आपने शादी क्यों नहीं की है ?

अदिति इस अप्रत्याशित प्रश्न से हंस देती है। मगर प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देती है।

अरिन्दम : आपने कभी अभिनय किया है ?

अदिति मौन है। लगता है वह अपने-आपको संयत करने की जी-जान से कोशिश कर रही है।

अरिन्दम : सिनेमा में उतरिएगा ?

अदिति : ठीक है। मैं आपसे सवाल करती हूं।

अरिन्दम : कीजिए।

अदिति : पहले दिन की शूटिंग की बातें आपको याद हैं ?

अरिन्दम का मन फिर व्यतीत की ओर लौट जाता है।

अरिन्दम : उसे क्या कभी भूला जा सकता है ?

अदिति कलम लेकर फिर से तैयार हो जाती है।

अरिन्दम : सबसे अधिक याद आते हैं मुकुंद लाहिड़ी···

पूर्वदृश्य

स्टूडियो का मेकअप रूम। मुकुन्द लाहिड़ी आईने की ओर चेहरा किए कुरसी पर बैठा है। वह गलपट्टा लगा

चुका है, अब मूंछें लगा रहा है। आइने में दीखता है कि अरिन्दम संकुचित-सा दरवाजे से कमरे के अन्दर प्रवेश कर रहा है।

मुकुन्द : नेपथ्य में कौन है ?

अरिन्दम : जी, मेरा नाम है अरिन्दम मुखोपाध्याय।

मुकुन्द : ओ, व्रजेश्वर ?

अरिन्दम : जी हां।

मुकुन्द : तुम्हारी यह पहली तसवीर है ?

अरिन्दम : जी हां।

मुकुन्द : तुम्हें 'व्रज' कहकर पुकारूं तो इसमें तुम्हें कोई एतराज है ?

अरिन्दम हंसता है।

अरिन्दम : बिलकुल नहीं।

मुकुन्द : को-एक्टर को उसके चरित्र के नाम से पुकारने का मैं बहुत दिनों से अभ्यस्त हूं। और इससे तुम्हें सुविधा ही होगी। काम के समय नाम लेकर पुकारने से तुम्हारी रिऐक्शन[1] भी स्वाभाविक होगी।

अरिन्दम : समझ रहा हूं।

मुकुन्द : फिर तुम मुझे बाबूजी कहकर मत पुकारना···ऐसा करना अतिशयोक्ति होगा। सिर्फ मेरे सामने सिगरेट···उफ ! इडिअट[2]।

विग लगाते समय मेक-अपमैन द्वारा मुकुन्द का सिर पकड़कर तनिक हिलाते ही यह प्रतिक्रिया होती है।

मुकुन्द : अबकी तुमने असावधानी की तो तुम्हारी असली मूंछें खींचकर उखाड़ डालूंगा।

---

१. प्रतिक्रिया

२. मूर्ख

अरिन्दम उद्विग्नता के साथ मुकुन्द की ओर बढ़ आता है।

अरिन्दम : क्या बात है ?...

मुकुन्द : स्टिफ नेक[1]। तकिया धूप में डालने के लिए नौकर से कहा था, मगर पट्ठा...

अरिन्दम : मैसाज[2] कराइएगा ?

मुकुन्द : मैसाज ?

अरिन्दम : इससे आपका दर्द दूर हो जाएगा।

मुकुन्द : ओ बाबा, जैक आफ आल ट्रेड्स ?[3]

अरिन्दम : ऑल का न होने पर भी इसकी जानकारी है।

मुकुन्द : कितना वक्त लगेगा ?

अरिन्दम : बहुत कम।

अरिन्दम थोड़ा और आगे बढ़ आता है, मुकुन्द के जबड़ों को कसकर पकड़ता हुआ पहले बायीं ओर फिर दाहिनी ओर दो बार झटकता है। मुकुन्द का चेहरा एक क्षण के लिए यातना से विकृत हो जाता है, उसके बाद अपनी गरदन जब अत्यन्त सावधानी के साथ इधर-उधर घुमाता है तो उसे पता चलता है कि अब दर्द नहीं है।

मुकुन्द : थैंक यू।

स्टूडियो के अन्दर 'देवी चौधरानी' की शूटिंग ज़ोर-शोर से चल रही है। मुकुन्द ब्रजेश्वर के पिता के वेश में गाव-तकिये पर टिका हुआ, गुड़गुड़ी का नैचा थामे, मुंदी आंखों से प्रतीक्षा कर रहा है—उसके चेहरे पर चारों तरफ से आलोक का वृत्त आकर केन्द्रित हो गया है। चारों ओर बहुत-से आदमी व्यस्तता के साथ चहल-कदमी

---

१. तनी हुई गरदन २. मालिश
३. हरफन मौला

कर रहे हैं ।

अरिन्दम : (नेपथ्य में) काम के समय रौद्र देखने में आया । निदेशक से लेकर एक साधारण आदमी तक उनके भय से गुमसुम खड़े थे ।

मुकुन्द : पंखे के सामने कौन खड़ा है ?

एक आदमी सरक्यूलेटर फैन् के सामने से झट से हट जाता है ।

मुकुन्द : याद रखो—एक मात्र अभिनेता ही इनडिस्पेन्सवल[1] होता है । उसको अनदेखा करने से काम नहीं चल सकता, क्योंकि एकमात्र वही है जिसका ऐसा कोई सहयोगी नहीं होता जो काम चला ले । फटिक !

सहयोगी मेक-अपमैन मुकुन्द के सामने दौड़ता हुआ उपस्थित होता है ।

फटिक : सर ?

मुकुन्द : मूंछों की वायीं ओर देखो, वायीं ओर ।···शिवनाथ, रेडी ?[2]

शिवनाथ निर्देशक है ।

शिवनाथ : एक मिनट सर ।

अरिन्दम एक ओर खड़ा-खड़ा चाय पी रहा है ।

मुकुन्द : व्रज कहां है ? व्रज !

अरिन्दम : जी सर ।

मुकुन्द : वार-वार डायलॉग[3] पढ़ूं, इतना धीरज नहीं है—समझे ? शव्दों में थोड़ा-वहुत हेर-फेर होगा—तव हां, वक्तव्य ठीक ही रहेगा । तुम केवल ख्याल करके क्यू[4] ग्रहण कर

---

१. अनिवार्य
२. तैयार हो ?
३. संवाद
४. संकेत

लेना। समझे न ?

अरिन्दम : हां सर।

शिवनाथ अब व्रजेश्वर वेशधारी अरिन्दम की ओर बढ़ता है। अरिन्दम के सामने ही खड़िया से रेखा खिंची हुई है।

शिवनाथ : सुनो भाई, इस मार्क[1] के आगे मत बढ़ना। 'एक्शन'[2] कहते ही दरवाजे से घुसकर यही पोजीशन लेकर खड़ा हो जाना। उसके बाद कथोपकथन।

अरिन्दम : ठीक है।

शिवनाथ : साइलेन्स !

दो-चार और सहयोगी 'साइलेन्स' कहकर चिल्ला उठते हैं। शिवनाथ कमरे के सामने आकर खड़ा होता है। अरिन्दम पीछे के दरवाज़े की ओर जाकर एक बार खंखारकर गला साफ कर लेता है। मुकुन्द के सामने से लोग अलग हट जाते हैं। चारों तरफ का वार्तालाप और चलने-फिरने की आवाज़ थम जाती है।

शिवनाथ : मुकुन्ददा रेडी ?

मुकुन्द ध्यानमग्न है। वे कोई उत्तर नहीं देते।

शिवनाथ : एक्शन।

अरिन्दम : (दरवाज़े से खड़िया की लीक पर चलता हुआ मुकुन्द की तरफ बढ़ आता है) पिताजी···(अरिन्दम रेखा के अंतिम छोर पर आकर 'पिता' को प्रणाम करता है।)

मुकुन्द : तुम्हारे विलंब से उद्विग्नता का अनुभव हो रहा था। इस वृद्धावस्था में इतनी अशांति का सामना करना पड़ेगा, यह मैंने नहीं सोचा था, व्रजेश्वर। यद्यपि मुझे अपने

---

१. निशान २. कार्यवाही

आचरण में कहीं कोई त्रुटि नहीं दीख पड़ती है। इस विषय पर मैंने बहुत सोचा-विचारा है—किन्तु जानते हुए कोई अन्यायपूर्ण आचरण किया हो, ऐसा स्मरण नहीं हो रहा है। अतः इसे नियति के क्रूर परिहास के अतिरिक्त क्या कहूं ?···देवीसिंह की कृपा से मेरी गिरफ्तारी का परवाना जारी किया गया है, सम्भवतः तुम्हें इसकी जानकारी प्राप्त हुई होगी ?

अरिन्दम : हुई है ?

मुकुन्द : फलतः अभी धन की आवश्यकता है। तुमने कोई व्यवस्था की है ?

अरिन्दम : ससुर जी देने को तैयार नहीं हुए—तब हां, एक दूसरी व्यवस्था की है।

अचानक मुकुन्द अपनी गंभीरता त्यागकर अरिन्दम की ओर देखते हैं और चिल्ला उठते हैं।

मुकुन्द : यह स्वगतोक्ति है या हालीवुड स्टाइल ?

अरिन्दम हतप्रभ हो जाता है।

मुकुन्द : बुदबुदा क्यों रहे हो ?

अरिन्दम : यहां ज़रा···नीचा स्वर ही ज़रूरी है न ?

मुकुन्द : नीचा ?

अरिन्दम : (नम्रता के साथ) बंकिम ने लिखा है कि उन दिनों लड़के बाप के सामने ज़ोर से नहीं बोलते थे।

मुकुन्द : ज़ोर से न भी बोले मगर अभिनय में एक तरह का सामंजस्य रखना पड़ेगा न ? मैं 'तेल' कहूं और तुम कहो 'जल' तो फिर काम कैसे चले ? और कंठस्वर क्या उपेक्षा की वस्तु है ? तुमने स्टेज पर काम किया है न ? आवाज़ के बारे में कुछ भी नहीं सीखा है ? ह्रस्व और दीर्घ का ज्ञान नहीं है ? या कैमरे के सामने आकर सबको तिलां-

जलि दे देना चाहिए ?···

मुकुंद की आवाज़ पर अरिन्दम का स्वर तैरने लगता है।

अरिन्दम : पहला दिन रहने के कारण सब कुछ पचा गया। लेकिन मैं मन ही मन जानता था कि मेरे अभिनय का ही तौर-तरीका अंत-अंत तक टिका रहेगा, क्योंकि यह आधुनिक से आधुनिक है और फिल्म के लिए वह ज्यादा उपयोगी है······

पूर्वदृश्य समाप्त

डाइनिंग कार।

अदिति : आपमें उतना कन्फिडेन्स[1] था ? उस वक्त भी ?

अरिन्दम : हां, था। अभिनय के वक्त था। तब हां, जब तसवीर रिलीज़ होने जा रही थी तो ज़रा गड़बड़ हो रही थी।

अदिति : गड़बड़ ?

अरिन्दम : हूं, गड़बड़।···मुझमें, जानती हैं, उसके पहले कोई बुरी लत नहीं थी। लेकिन तसवीर जिस दिन शुरू होने जा रही थी उसके एक दिन पहले रात में···

पूर्वदृश्य

अरिन्दम का मेस का कमरा। एक मेज़ पर दो गिलास रखे हैं। ज्योति हाथ में थमी बोतल से दोनों में शराब ढालता है। एक गिलास अरिन्दम की ओर बढ़ाता है।

ज्योति : लो, पी लो।

---

१. आत्म-विश्वास

ज्योति कुरसी पर बैठा है, अरिन्दम खाट पर। उसके पीछे हालीवुड के अभिनेताओं की मढ़ी हुई तसवीरें दीख पड़ती हैं। अरिन्दम गिलास को होठों से लगाकर मुंह बनाता है।

ज्योति : नर्व स्टेडी[1] होगा।

अरिन्दम : असली बात क्या है, जानते हो ?

ज्योति : क्या ?

अरिन्दम : मेरे इस नर्वसनेस का कोई न कोई कारण है।

ज्योति : यह क्या कोई कहने की बात है। कल तसवीर रिलीज़ होने जा रही है।

अरिन्दम माथा हिलाता है।

अरिन्दम : असली बात है—मेरा काम अच्छा नहीं हुआ है।

ज्योति : अच्छा नहीं हुआ है ?

अरिन्दम : गड़बड़ी—बहुत-सी गड़बड़ी रह गई है।

ज्योति : वाह भाई। हम लोगों ने क्या तसवीर नहीं देखी है ? हमारी राय की कोई कीमत ही नहीं ?

अरिन्दम : नः। नहीं।

अरिन्दम खाट से उठकर चहल-कदमी करने लगता है।

अरिन्दम : जिअरो।

ज्योति : जिअरो ?

अरिन्दम : जिअरो। तुम समझते नहीं, जानते नहीं। मुझसे ज़्यादा किसीको भी मालूम नहीं है। एन एक्टर नोज़[2]। जब अभिनय कर रहा था, मेरी समझ में आ गया—कि गड़-बड़ हो रही है। गलती मेरी नहीं है, लेकिन गलती है, रह गयी है। तुम लोग समझ नहीं पाओगे। तुम लोग ब्लाइंड[3] हो। मुकुन्द लाहिड़ी के साथ जितने सीन हैं, सब

---

१. स्नायु संतुलित २. एक्टर जानता है। ३. अंधे

के सब बरबाद हो गए हैं ।

ज्योति : अरे बाबा, सो तो पूरी तसवीर में सिर्फ चार ही सीन हैं ।

अरिन्दम : सो भी क्यों होता ? पहली ही बाज़ी में साला मात कर देता···लेकिन उस आदमी ने लंगड़ी मार दी ।

ज्योति : यह तुम्हारी ज़्यादती है ।

अरिन्दम : लंगड़ी क्यों मारी, जानते हो ? ऐसा नहीं करता तो वह खुद चित हो जाता । मैं पार्ट के बारे में क्या सोच रहा हूं, यह बात उसकी समझ में आ गयी थी । यही बात उससे बरदाश्त नहीं हुई । जानते हो, ये लोग किस तरह के हुआ करते हैं ? इन लोगों के लिए चरित्र-वरित्र नाम की कोई चीज़ नहीं होती । इन्हें कोई भी पार्ट दो, एक ही सांचे में ढाल देंगे । एक ही तरह की आवाज़, एक ही तरह का उच्चारण, एक ही मैनरिज़्म[1] । और पब्लिक भी वैसी ही । मुकुन्द लाहिड़ी—ओहः हः हः । क्या ही अभिनय है, क्या ही आवाज़ ! अरे, वह तो फिल्म की ऐक्टिंग हुई ही नहीं । केवल कैमरे के सामने ही ज़्यादती नहीं चल पाती । ज़रा-सी ज़्यादती करोगे तो वह दस गुनी ज़्यादा हो जाएगी । मैं जो करना चाहता था, वह सामने आ जाता तो उसके लिए डेन्जरस साबित होता । यह बात उसकी समझ में आ गयी और समझने के बाद मुझे नया आदमी पाकर, धमकियों के बल पर···उफ ।

अरिन्दम फिर से खाट पर आकर बैठ जाता है और हाथ का गिलास होठों से लगाता है ।

ज्योति : तुममें यह जो डिस्सैटिस्फैक्शन[2] है—यही सबसे अच्छा

---

१. कृत्रिमता

२. असन्तोष

लक्षण है। इसका मतलब है कि तुम उन्नति करोगे।
अरिन्दम एकाएक उत्तेजित हो जाता है। मेज पर मुक्का मारकर कहता है :

अरिन्दम : करूंगा, ज़रूर करूंगा। आइ विल गो टू द टाप, द टाप, द टाप।[1]

पूर्वदृश्य समाप्त

डाइनिंग कार। इसी बीच दोनों का खाना समाप्त हो चुका है, वेयरा प्लेट उठाकर ले जाता है। अरिन्दम सिगरेट सुलगाता है।

अरिन्दम : जानती हैं, पहले शो में तसवीर देखने गया। आधे से अधिक देख नहीं सका। लेकिन खेल खत्म होने के बाद कितने आटोग्राफ दिए, पता है ?
अदिति मुसकराती है।

अदिति : अच्छा लगता है, है न ?

अरिन्दम : बहुत ही अच्छा।

अदिति : आपकी किसी तसवीर ने अब तक···यानी···

अरिन्दम : मार खायी है या नहीं, यही पूछना चाहती हैं ?

अदिति : हां···

अरिन्दम : नहीं। अब तक नहीं।
अरिन्दम दीर्घश्वास लेता है। अदिति की दृष्टि से यः अगोचर नहीं रहता।

अदिति : लंबी सांसें क्यों ?

अरिन्दम : मैंने देखा है कि तीन-तीन तसवीरें एक-एक कर मार ख जायें तो उसका नतीजा क्या होता है।

---

१. मैं शिखर पर अवश्य पहुंचूंगा।

अदिति : किसके बारे में बता रहे हैं ?

अरिन्दम : तीनेक साल पहले···तब मेरा नाम फैल चुका था, मकान बन चुका था, दो-दो गाड़ियां···रात के वक्त लगभग ग्यारह बजे···दूसरे दिन शूटिंग होने वाली थी—नौकर ने आकर खबर दी, एक भले आदमी आए हैं, उन्हें ज़रूरी काम है। मैं बाहर आया···

पूर्वदृश्य

रात। अरिन्दम का मकान। अरिन्दम ड्रेसिंग गाउन पहनता हुआ बेडरूम से निकलकर बैठक में आता है। कमरे के दूसरे कोने में मुकुंद लाहिड़ी अंधेरे में सोफे पर बैठे हैं। उनको देखकर अरिन्दम को आश्चर्य होता है। वह आगे आता है।

अरिन्दम : मुकुंददा।

मुकुंद : पहचान लिया ?

अरिन्दम : आप क्या कह रहे हैं मुकुंददा···

अरिन्दम मुकुंद के सामने, कुछ दूरी पर रखे, एक सोफे पर बैठता है।

मुकुंद : बहुत-से आदमी पहचानते ही नहीं। भुला बैठे हैं···

मुकुंद का हाथ थरथरा रहा है। अरिन्दम की दृष्टि इस-पर जाती है।

अरिन्दम : आप बीमार हैं ?

मुकुंद अपने-आपको थोड़ा-बहुत संयत करते हैं। कुछ क्षणों तक असमंजस में रहने के बाद वे पूछते हैं।

मुकुंद : घर में कुछ है ?

अरिन्दम इस शब्द का अर्थ समझ जाता है। वह अपने बेयरा को पुकारता है।

अरिन्दम : रामशरण !

वेयरा डाइनिंग रूम के दरवाज़े के सामने आकर खड़ा होता है।

अरिन्दम : क्या लीजिएगा मुकुंददा ?

मुकुंद उदास हंसी हंसता है।

मुकुंद : मैं नहीं चाहता हूं, मेरी सोल[1] चाहती है।

अरिन्दम : क्या चाहती है ?

मुकुंद : उम्दा किस्म की ह्विस्की है ?

अरिन्दम वेयरा की ओर मुड़ता है।

अरिन्दम : साहव के लिए ह्विस्की और सोडा···

वेयरा चला जाता है।

मुकुंद : तुम नहीं लोगे ?

अरिन्दम : कल मेरी शूटिंग होने जा रही है।

मुकुंद : शूटिंग ?···शव्द तो पहचाना-पहचाना जैसा···

अरिन्दम चुपचाप मुकुंद की ओर ताक रहा है। मुकुंद की आंखों में उदासी तैर रही है।

मुकुंद : उन्नीस सौ तेईस···मेरी पहली तसवीर···'कपाल-कुंडला'। शुरू में ग्रिप[2] नहीं पा सका। उसके वाद आयी टाकीज़—और आयी भी जैसे मेरे ही लिए। आइ वेंट स्ट्रेट टु द समिट।[3]

वेयरा मुकुंद के पास की मेज़ पर शराव लाकर रखता है और गिलास में ढाल देता है। मुकुंद गिलास हाथ में लेकर उससे एक घूंट पीता है। उसका हाथ अव भी थरथरा रहा है।

मुकुंद : उसके वाद एक दिन देखा कि पीछे छूट गया हूं। किस

---

१. आत्मा　　　२. पूरी जानकारी　　　३. मैं सीधे शिखर पर पहुंच गया।

तरह छूट गया, समझ नहीं सका। सिर्फ इतना ही देख सका कि थ्रोन[1] तो वरकरार है—वट आइ हैव वीन ओवरथ्रोन।[2]

मुकुंद अपने मज़ाक पर अपने-आप हंस पड़ता है। अरिन्दम उसकी ओर अपलक ताक रहा है। मुकुंद गिलास से दूसरा घूंट लेता है।

मुकुंद : गुड ह्विस्की ! कौन-सी तसवीर वना रहे हो ?

अरिन्दम : है एक···

मुकुंद : पात्रों का चुनाव हो गया है ?

अरिन्दम : ठीक-ठीक मालूम नहीं।

मुकुंद : मेरे लिए कुछ हो सकता है ? दरवान वगैरह, कुछ भी—अयं ?

मुकुंद एक कहकहा लगाता है। अरिन्दम उसकी ओर ताक रहा है। मुकुंद अव गंभीर हो जाते हैं।

मुकुंद : यह जो स्टैग्नेशन[3] है न—वड़ी ही खतरनाक होती है।···दो-दो पालिसियां थीं···दोनों की दोनों लैप्स[4] कर गयीं। फोर इयर्स···नो वर्क···नो वर्क !···[5]

अरिन्दम अव भी चुप्पी साधे हैं। वह एक ही मुद्रा में ताक रहा है।

मुकुंद : वे लोग आजकल तुम्हारी वातें मानते हैं···एक वार कोशिश करो न—छोटा-मोटा—या एनिथिंग[6]···

अरिन्दम : आप काम कर सकेंगे ?

मुकुंद : मेरी सेहत की वावत कह रहे हो ?

अरिन्दम : आपको देखने से लगता है कि आप स्वस्थ नहीं हैं

---

१. तख्त
२. मैं तख्त से उतार दिया गया हूं।
३. निष्क्रियता
४. समाप्त हो गयीं।
५. चार सालों से कोई भी काम हाथ में नहीं है।
६. कुछ भी

मुकुंददा ।

मुकुंद : क्यों---वॉयस ? मेरी वॉयस[1]···

एकाएक मुकुंद को खांसी का दौरा आता है। वह किसी तरह स्वयं को संयत करता है।

अरिन्दम : सिर्फ वॉयस से ही क्या होगा मुकुंददा ?

मुकुंददा की आंखों में अंधेरा गहराने लगता है। वह लंबी उसांस लेता है।

मुकुंद : मरे हुए हाथी के वारे में जो मुहावरा है, वह फिर क्या असत्य है ?

पूर्वदृश्य समाप्त

डाइनिंग कार। अरिन्दम और अदिति आमने-सामने वैठे हैं। अरिन्दम की आंखें खिड़की के वाहर हैं। पता चल जाता है कि मुकुंद के दयनीय फलाफल की स्मृतियों के भार से उसका मन दवा हुआ है। वेयरा आकर अदिति के हाथ में एक मुड़ा हुआ कागज़ थमा जाता है। वह कागज़ खोलकर देखती है, लिखा है :

'वहुत जम कर वातचीत चल रही है। मगर उस समाचार के वारे में पूछ लेना, भूलना मत।'

अदिति कागज़ से चेहरा हटाकर दूर वैठी शेफाली की ओर ताकती है। उसीने स्लिप भेजी है। शेफाली अर्थपूर्ण हंसी हंसती है। अदिति मुसकराती हुई स्लिप को मोड़-माड़कर सामने रखे ऐशट्रे में फेंक देती है। उसके वाद वह अरिन्दम की ओर देखती है।

अदिति : आपने भले आदमी को कोई काम दिया था ?

---

१. आवाज़

अरिन्दम : कैसे देता ? देकर किसकी भलाई होती ? भले आदमी हर रोज़ मरफिन का इंजेक्शन लेते थे—फिर उनसे अभिनय कैसे होता ?

अदिति : फिर आपने जमकर बदला लिया ।

अरिन्दम अवाक् होकर अदिति की ओर ताकता है। अदिति हंस रही है ।

अदिति : पहले दिन उन्होंने आपके साथ जैसा व्यवहार किया था, आप भूल सके थे ठीक-ठीक ? बताइए ।

अरिन्दम : आप तो खतरनाक व्यक्ति हैं, साहब ।

अदिति इस बात का कोई उत्तर दिए बिना खिड़की से बाहर की ओर देखने लगती है । ट्रेन बंगाल की सीमा के पार आ गयी है । बाहर छोटा नागपुर अंचल का दृश्य दृष्टिगोचर होता है ।

अदिति : बंगाल के बाहर आते ही दृश्य कैसा-कैसा तो बदल जाता है । इस ओर बड़ा ही रूखा-रूखा जैसा दीख पड़ता है ।

अरिन्दम : बहुत-कुछ आप जैसा ।

अदिति : मेरे जैसा ? आप स्वयं रूखे नहीं हैं ? आपको निष्ठुर नहीं बनना पड़ा था ? महान् बनने के पथ में जो भी बाधाएं मिलीं, आपने उन्हें जड़-मूल से नहीं उखाड फेंका था ?

अरिन्दम : आप विवेक की भूमिका में बड़ा ही अच्छा पार्ट कर सकती हैं ।

अदिति : विवेक क्या बुरी वस्तु है ?

अरिन्दम : बुरा तो नहीं, मगर है बड़ा खतरनाक । उसको जड़-मूल से उखाड़ देने से ही···

अदिति : क्या कह रहे हैं आप । जब तक उसका अस्तित्व है, तभी तक मनुष्य में मनुष्यता रह सकती है ।

अरिन्दम जैसे फिर से किसी भावना में डूब जाता है। उसकी आंखें खिड़की के बाहर चली जाती हैं।

अरिन्दम : जानती हैं, सबसे बुरा क्या लगता है? जो लोग किसी ज़माने में बहुत ही निकट थे…जैसे वीरेश…

पूर्वदृश्य

अरिन्दम और वीरेश उत्तरी कलकत्ते से साइकिल पर सवार होकर पुल पार कर रहे हैं। दूर, पीछे कारखाने की चिमनी नज़र आ रही है।

अरिन्दम : (नेपथ्य में) वीरेश और मैंने एक ही साथ दस बरसों तक लिखा-पढ़ा था। एक ही स्कूल, एक ही कालेज में। वह पालटिक्स करता था और मैं था बेकार, इसीलिए मैं उसके साथ रहता था…

वीरेश एक कारखाने के सामने गेट-मीटिंग में भाषण दे रहा है। उससे थोड़ी दूर, रास्ते के एक किनारे, लैंप पोस्ट से पीठ टिकाये अरिन्दम नाटक की एक किताब खोलकर अपना पार्ट याद कर रहा है।

अरिन्दम : (नेपथ्य में) वीरेश गेट के सामने खड़ा होकर स्पीच झाड़ता था और मैं भीड़ से हटकर, एक किनारे खड़ा-खड़ा आगामी नाटक के लिए स्पीच मांजा करता था। दोनों मित्रों का वक्त अच्छी तरह कट जाता था।

अरिन्दम और वीरेश सड़क के एक किनारे खाट पर बैठे हैं। स्थान किसी बस्ती के आसपास का अंचल। दोनों के हाथ में सिगरेट है।

वीरेश : तुम्हें अपने साथ क्यों लाता हूं, जानते हो?

अरिन्दम : तुम लाते हो—का मतलब? मैं स्वेच्छा से आता हूं।

वीरेश : बहुत अच्छी बात। लेकिन सिर्फ आने से ही नहीं होगा,

तुम्हें कुछ मामलों में और भी सावधान होना होगा। तुम अपना नाटक लेकर कल्पना के ऐसे लोक में रहते हो कि रिएलिटी[1] से तुम्हारा अच्छी तरह से साक्षात्कार ही नहीं हो पाता।

अरिन्दम : यह बात ?

वीरेश : तुम इन मामलों में थोड़ा और फील[2] करते तो कितना अच्छा होता।

अरिन्दम : अच्छा क्या होता ?

वीरेश : यानी अपना यह चेहरा और आवाज़ लेकर अगर तुम भाषण देने का साहस कर पाते···

अरिन्दम : उस कारखाने के गेट के सामने ?

वीरेश : वाई नॉट[3] ?

अरिन्दम : और तुम होगे मंच का लेबर-लीडर ? यानी अभिनय तुम करते ? नाटक का बारह बज जाता ब्रदर !

एक और गेट-मीटिंग का दृश्य। वीरेश भाषण दे रहा है, पीछे, कारखाने का गेट बन्द है, उसपर तरह-तरह के नारे लिखे पोस्टर चिपके हैं। अरिन्दम बगल में ही खड़ा था, वह आवाज़ सुनकर अपने आस-पास आंखें दौड़ाता है।

अरिन्दम : (नेपथ्य से) एक बार हड़ताल की एक मीटिंग में वीरेश अपने शब्दों को उछाल रहा था, मैं आसपास ही चहल-कदमी कर रहा था, तभी शोर-गुल सुनकर मुड़ने पर देखा कि लोगों का एक जत्था है—निस्संदेह वे दलाल थे—वे मीटिंग की तरफ बढ़ रहे थे और उनके पीछे पुलिस की एक वैन थी। समझ गया, अब कोई न कोई बखेड़ा खड़ा

---

१. यथार्थ २. अनुभव ३. क्यों नहीं ?

होगा ।

दलालों की टोली और पुलिस वैन आ जाती हैं । वैन के रुकते ही उसमें से पांच-छह पुलिस मैन छलांग लगाकर उतरते हैं और वैटन हाथ में लिए सभास्थल की ओर दौड़ पड़ते हैं । शोरगुल । भीड़ में घबराहट । वीरेश हाथ उठाकर सबको शांत करने की कोशिश करता है । इसी बीच अरिन्दम एकाएक भीड़ में कूद पड़ता है ।

अरिन्दम : आम तौर से, समझती हैं, मैं झमेला-झंझट पसन्द नहीं करता । सबसे अलग-थलग—यही है मेरा माटो[1] लेकिन उस दिन मुझे क्या हो गया, नहीं जानता । शायद वीरेश को मुसीबत में देखकर मैं भीड़ के बीच कूद पड़ा ।

एक दलाल सड़क के किनारे से ईंट उठाकर भीड़ की ओर फेंकता है । ईंट अरिन्दम के सिर पर लगती है । अरिन्दम गिर पड़ता है ।

अरिन्दम : और उसके बाद सिर पर एक दूसरी ईंट आकर गिरती है । बस, ब्लैक आउट ।

परदे पर कुछ देर तक अंधकार तैरने लगता है ।

अरिन्दम : (नेपथ्य से) बाद में सुनने में आया कि वीरेश अरेस्टेड[2] है ।

पांच वर्ष तक उसका कोई अता-पता नहीं चला । उस बीच मैं तसवीर में उतर चुका था, नाम-धाम पैदा कर चुका था, बालीगंज में एक फ्लैट ले चुका था । रविवार की सुबह नयी तसवीर होने वाली थी, दर्जी कास्ट्यूम[3] की माप लेने आया था···

अरिन्दम की बालीगंज के फ्लैट की बैठक । अरिन्दम

---

१. सिद्धान्त २. गिरफ्तार ३. पोशाक

हाथ उठाये खड़ा है, दर्जी उसके सीने की माप ले रहा है, एक आदमी मोढ़े पर एक तरफ बैठा कागज़ में माप लिख रहा है। उनके अतिरिक्त कमरे में और भी बहुत-से आदमी हैं। सभी अरिन्दम के बंधुस्थानीय हैं। ज्योति भी इस दल में दीख रहा है। इसी बीच एक फोटोग्राफर अरिन्दम की विभिन्न मुद्राओं की तसवीरें ले रहा है।

अरिन्दम : ट्रायल कब दे रहे हो ?

दर्जी : बुधवार को।

अरिन्दम : क्यों, बुधवार क्यों ? दो दिन पहले नहीं हो सकता ?

दरवाज़े पर दस्तक पड़ती है। वीरेश आता है। वह संकुचित-सा कमरे का दृश्य देखता है।

अरिन्दम : क्या है जी ?

वीरेश : व्यस्त हो ?

अरिन्दम : नहीं-नहीं—आओ, अन्दर चले आओ।

वीरेश अन्दर आकर कमरे के एक कोने में पड़ी मेज के सामने एक कुरसी पर बैठ जाता है।

अरिन्दम : एक मिनट। (दर्जी से) सुनो, दो दिन पहले ट्रायल दे जाओ न ! फिटिंग में गड़बड़ी होने से एक्टिंग बहुत सफर[1] करती है।

ज्योति : इस जन्म में तुम हिन्दी तसवीर नहीं बना पाओगे।

दर्जी : ठीक है, सोमबार की शाम को दे दूंगा···

अरिन्दम : बहुत अच्छा। (ज्योति से) ऐ, तुम लोग एक क्षण के लिए ज़रा बगल के कमरे में चले जाओ।

सभी उठकर बगल के कमरे में चले जाते हैं। दर्जी और उसके आदमी भी कमरे से बाहर चले जाते हैं। फोटो-

---

१. हानि पहुंचना

ग्राफर जाने के पहले अरिन्दम को प्रणाम कर जाता है। अरिन्दम वीरेश के सामने थोड़ी घबराहट महसूस करता है। वीरेश उस समय मेज़ पर रखी बहुत-सी हस्ताक्षर की हुई अरिन्दम की फोटो को उलट-पुलटकर देख रहा था। कमरा खाली होने पर वह अरिन्दम की ओर देख-कर मुसकराता है।

वीरेश : लगता है, ये सब तुम्हारे भक्तों के लिए हैं।

अरिन्दम : मत कहो। ये ही तो पब्लिक हैं, इसीलिए इन्हें डिस-प्लीज़[1] नहीं किया जा सकता है। इधर आओ···

वीरेश उठकर आता है। अरिन्दम वीरेश की बगल में सोफे पर बैठता है। अरिन्दम वीरेश को सिगरेट देकर जलती हुई तीली उसकी ओर बढ़ा देता है।

वीरेश : कैसा चल रहा है?

अरिन्दम : कितने दिन हुए? पांचेक वर्ष?

वीरेश अरिन्दम की ओर ताक रहा है।

वीरेश : तुम्हारे चेहरे पर एक तरह की चमक आ गयी है।

अरिन्दम : अभी तो दाढ़ी भी नहीं बनायी है।

वीरेश : द ग्लो आफ सक्सेस।[2]

अरिन्दम : सक्सेस कौन नहीं चाहता?

वीरेश : अब तक मैंने तुम्हारी एक भी तसवीर नहीं देखी है।

अरिन्दम : अच्छा ही किया है।

वीरेश : अच्छी तरह से ही हो।

अरिन्दम : तुम कैसे हो?

वीरेश : उसी तरह।

अरिन्दम : नो चेंज?[3]

---

१. नाखुश २. सफलता की दीप्ति ३. परिवर्तन नहीं?

वीरेश सिर हिलाकर 'नहीं' जताता है। वह अरिन्दम का हाव-भाव ध्यानपूर्वक देख रहा है।

वीरेश : तुममें जैसे एक···

अरिन्दम : परिवर्तन ?

वीरेश : लगता तो है।

अरिन्दम : यही तो दुनिया का नियम है। डाइअलेक्टिक्स[1]। यही न ?

वीरेश : चेंज कहां है—यही सोच रहा हूं।

अरिन्दम एकाएक उठकर खड़ा हो जाता है। उसे जैसे अशांति-बोध हो रहा है। मेज़ से टेनिस का रैकेट लेकर दो बार हाथ से छुलाता है। इसी बीच चाय आती है। वीरेश एक प्याला उठा लेता है।

वीरेश : तुमने गाड़ी खरीद ली है न ?

अरिन्दम : स्माल कार, नॉट बिग[2], क्यों ?

वीरेश : लिफ्ट दोगे ?

अरिन्दम : कहां जाओगे ?

वीरेश : यह सवाल पूछने की बात तो नहीं थी।

अरिन्दम हंसता है।

अरिन्दम : ओ० के०।[3]

अरिन्दम और वीरेश गाड़ी में जा रहे हैं। अरिन्दम गाड़ी चला रहा है, उसकी बगल में वीरेश बैठा है।

अरिन्दम : (नेपथ्य से) गाड़ी में वीरेश ने यह नहीं बताया कि वह मुझे कहां लिए जा रहा है। तब हां, मेरे मन में एक तरह का संदेह पैदा हो रहा था। और वह असत्य नहीं था, इसका पता थोड़ी देर बाद ही चल गया।

---

१. द्वन्द्ववाद   २. छोटी कार, बड़ी नहीं।   ३. ठीक है।

कारखाना मुहल्ला। गाड़ी मुड़ते ही विशाल भीड़ के बीच पड़ जाती है। हड़तालियों का जमघट। वे लोग सड़क पर बैठे थे। अरिन्दम की गाड़ी पर नज़र पड़ते ही उठकर खड़े हो जाते हैं।

अरिन्दम हतप्रभ है।

वीरेश गाड़ी से उतर कर अरिन्दम की ओर जाता है और खिड़की से अपनी गरदन अन्दर घुसेड़ता है।

वीरेश : आओ…

वीरेश दरवाज़ा खोलने जा रहा है, अरिन्दम मना करता है।

वीरेश : क्या हुआ ?

अरिन्दम भीड़ की ओर ताकता है। उसकी सांसें तेज़-गति से चल रही हैं।

वीरेश : क्या हुआ ? आओ…

अरिन्दम : तुम्हारा मतलब क्या है ?

वीरेश : कुछ भी नहीं…उतरकर दो-चार शब्द कहना है—बस इतना ही।

अरिन्दम : क्यों ?

वीरेश : तुम्हें देखने से उनके मन में ताकत बंधेगी। इक्कीस दिनों से स्ट्राइक चल रही है। मैंने उन लोगों से कहा था कि तुम्हें लेकर आऊंगा। वे लोग तुम्हें इक्सपेक्ट[1] कर रहे हैं। वे भी तो आखिर पब्लिक ही हैं।

अरिन्दम दांत पीसकर कहता है।

अरिन्दम : इम्पॉसिबॅल।[2]

वीरेश : 'इम्पॉसिबॅल' क्यों कह रहे हो ? उतरकर चले आओ।

---

१. प्रतीक्षा

२. असंभव

अरिन्दम : इम्पॉसिवॅल । तुम—तुम समझते नहीं—इन मामलों में हम लोगों को सम्मिलित करना ठीक नहीं—रिस्की[1]··· हम लोगों का···

वीरेश : किस तरह की गड़बड़ी हो सकती है ? कौन साला तुम्हारी कोई हानि···

अरिन्दम : सुनो, तुम रुपया चाहो तो दे सकता हूं—एनी अमाउंट[2] —मगर इस तरह—असंभव है। तुम मेरे वारे में क्यों नहीं सोचते ? अव मैं पहले का मैं न रहा।

वीरेश : इसीलिए तो तुम्हें लाया हूं।

अरिन्दम : लेकिन आइ जस्ट[3]···यह नहीं हो सकता, वीरेश।

वीरेश : इन लोगों के मामले में कोई फीलिंग[4] नहीं है ?

अरिन्दम : यह लो। फीलिंग्स का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। मैं तो कह रहा हूं, तुम्हें रुपये चाहिए तो मैं अभी तुरन्त देने को राज़ी हूं।

वीरेश : दूसरे नाम से न ?

अरिन्दम : इससे क्या आता-जाता है ?

वीरेश समझ जाता है कि अव चेष्टा करना व्यर्थ है। वह कुछ क्षणों तक अरिन्दम की ओर ताकता रहता है।

अरिन्दम के ललाट पर पसीने की बूंदें उभर आयी हैं। वह वीरेश्वर की ओर ताकने में अपने-आपको असमर्थ पाता है।

वीरेश : जानता हूं, तुम्हें पैसे की कोई कमी नहीं है।···अच्छा ज़रूरी होगा तो तुम्हारे पास आऊंगा···

अरिन्दम : चलता हूं।

---

१. जोखिम-भरा
२. जितनी भी रकम चाहिए।
३. मैं अभी
४. संवेदना

अरिन्दम गाड़ी स्टार्ट करता है। वीरेश्वर सर झुकाये हड़तालियों की ओर बढ़ता हुआ दीख पड़ता है। अरिन्दम अपनी गाड़ी पीछे की तरफ मोड़कर, घुमाता है। अरिन्दम गाड़ी से लौट रहा है। वह काला चश्मा लगाये भावशून्य दृष्टि से ताक रहा है।

अरिन्दम : (नेपथ्य में) मैं वीरेश्वर के अनुरोध की रक्षा नहीं कर सका। क्यों नहीं कर सका, भय किस बात का था, यह कहना मुश्किल है। तब हां, यह बात मेरी समझ में आ गयी कि मैं वीरेश्वर की नज़रों में गिर गया हूं।

पूर्वदृश्य समाप्त

डाइनिंग कार।

खिड़की से देखे गए बाहर के तमाम दृश्यों से अलग होकर कैमरा अरिन्दम के चेहरे की ओर आता है। अरिन्दम उदास है, चिंता में मग्न।

अरिन्दम : जानती हैं, कभी-कभी क्या महसूस होता है, इतना परिवर्तन आना ही संभवतः ठीक रहता।

अदिति : यह आप इसलिए कह रहे हैं कि इतने-इतने आदमियों के बीच आप जो आनन्द बांट रहे हैं, यह भी एक बड़ा काम है। यही न ? यह आप पहले नहीं कर पाते थे। और उस काम में भी ज़रूर ही एक तरह का आदन्द है, इसकी कोई न कोई सार्थकता है।

अरिन्दम : सो तो है ही। और यह काम न केवल पेशा है, बल्कि नशा भी है।

अदिति : फिर और क्या। काम ठीक रहे तो चिन्ता करने की कोई बात ही पैदा नहीं होती।

अरिन्दम : मैं चिन्ता में हूं, यह मैंने आपसे कहा है ?

अदिति : सुबह से आपने मार्केट खराब होने की बातें कितनी बार कही हैं, यही बताइए न ।

अरिन्दम : यह हम लोगों का एक पागलपन है । असली बात क्या है, जानती हैं ? पब्लिक चीज़ ही गड़बड़-घोटाला हुआ करती है ।

अदिति : और इस गड़बड़-घोटाले के बल पर ही आज आपके पास सब कुछ है ।

अरिन्दम हंसता है ।

अरिन्दम : आपसे बातों में जीतना मुश्किल है ।

अदिति : मैं अब बातचीत नहीं करने जा रही हूं ।

अरिन्दम उठकर खड़ा हो जाता है ।

अरिन्दम : ठीक है । आप काम कीजिए । आपका मैंने कीमती वक्त बरबाद किया ।

अदिति अपना कागज-पत्तर मोड़कर बैग में रखती है ।

डी कमरा ।

अरिन्दम दरवाज़ा खोलकर अन्दर जाता है । तीसरा पहर हो चुका है । मनोरमा सोयी है, किन्तु बुलबुल जगी हुई हालत में है ।

अरिन्दम : तुम सोयीं नहीं ?

बुलबुल सिर हिलाकर नकारात्मक उत्तर देती है ; अरिन्दम बुलबुल के माथे का स्पर्श करता है ।

अरिन्दम : ज्वर थोड़ा कम है न ?

बुलबुल सिर हिलाकर 'हाँ' जताती है । अरिन्दम की तरफ से वह अपनी आँखें नहीं हटा पा रही है । इसी क्षण-विशेष की वह प्रतीक्षा कर रही थी ।

अरिन्दम : मां को मालूम है ?
बुलबुल : 'नहीं' में उत्तर देती है।
अरिन्दम अपने बैग से नींद की गोली निकालता है।
बुलबुल : आपकी तबीयत खराब है ?
अरिन्दम : उहूं, नींद की दवा है।
बुलबुल : एक बार तो आप सो चुके हैं।
अरिन्दम : और एक बार इच्छा हो रही है।
बुलबुल : वैसे नींद नहीं आएगी ?
अरिन्दम : अगर न आए ? रिस्क लेना ठीक नहीं है।
अरिन्दम गोली लेता है उसके बाद लेट जाता है।
वेस्टिब्यूल ट्रेन तीव्र वेग से दिल्ली की ओर जा रही है।

चेयरकार।

अदिति आती है। अजय और शेफाली की बगल से होती हुई खिड़की के पास अपनी जगह पर जाकर बैठती है। शेफाली समाचार जानने के लिए अत्यन्त उत्कंठित है, लेकिन अदिति के हाव-भाव पर नज़र पड़ते ही उसकी उत्तेजना अपने-आप बुझ जाती है। अरिन्दम से ऐसी कौन-सी बातें हुईं जिसके कारण अदिति में इस प्रकार का भाव-परिवर्तन हुआ ? अदिति समझ जाती है कि शेफाली उसकी ओर कुतूहलपूर्ण आंखों से देख रही है। वह स्थिति को थोड़ा हलका करने के लिए बैग से चाकलेट निकाल-कर शेफाली को देती है। शेफाली के मुंह में पान है, इस-लिए वह स्वीकार नहीं करती है। अजय एक अदद चाक-लेट लेकर मुंह में डालता है और तिरछी निगाहों से

अपनी पत्नी की ओर देखता हुआ उसकी निराशा का उपभोग करता है।

डी कमरा।

अरिन्दम लेटा है, उसकी आँखें अधमुदी हैं। कैमरा उसकी ओर बढ़ आता है।

पूर्वदृश्य

रात। अरिन्दम की बैठक। एक युवती अरिन्दम के सामने खड़ी है, उसकी दृष्टि और स्वर में दृढ़ता है जिससे आत्म-विश्वास की झलक मिल रही है। युवती का नाम है प्रमीला।

प्रमीला : मैं फिल्म में अभिनय करना चाहती हूं।

अरिन्दम : आइ सी[1]...

प्रमीला : इस तरह इतनी रात में मेरा आना ही बता रहा होगा कि मुझे ज़रूरी काम है।

अरिन्दम : हो सकता है।

प्रमीला : आप 'मन का मनुष्य' बना रहे हैं न ?

अरिन्दम : बात तो ऐसी ही है।

प्रमीला : मुझे नायिका का रोल मिल सकता है ?

अरिन्दम : नायिका का ? वह तो तय हो चुका है।

प्रमीला : मालूम है।

अरिन्दम : फिर ?

प्रमीला : मुझे लेने से नहीं चलेगा ?

---

१. अच्छा।

अरिन्दम सिगरेट सुलगाता है। साफ-साफ पता चल जाता है कि इसके पहले उसे इस प्रकार की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था।

अरिन्दम : वह सवाल फिर पैदा ही कहां होता है।

प्रमीला : आपका इसमें कोई हाथ नहीं है?

अरिन्दम : हाथ का काम तो खत्म हो चुका है।

प्रमीला : मैं जानती हूं कि आप कोशिश करेंगे तो हो ही जाएगा।

अरिन्दम असहिष्णु हो उठता है।

अरिन्दम : कोशिश करने का कोई कारण तो होना चाहिए। जहां नायिका का चुनाव हो गया है वहां किसी दूसरी औरत की बात···

प्रमीला अरिन्दम को बात समाप्त करने नहीं देती है।

प्रमीला : मुझमें क्षमता है, ऐमबिशन[1] है। मौका मिलना मुश्किल है। आप तो जानते ही हैं। नये आदमी को कौन आसानी से मौका देता है?

अरिन्दम : इसीलिए मेरे पास आयी हैं?

प्रमीला : हां।

दोनों कुछ क्षणों तक एक-दूसरे की ओर ताकते हैं।

प्रमीला : मैं फबती हूं या नहीं, देखियेगा।

अरिन्दम : आप शादीशुदा हैं?

प्रमीला शुरू में कुछ उत्तर नहीं देती है। अरिन्दम की ओर देखते-देखते अचानक उसकी आंखें आंसुओं से भर जाती हैं। क्षण-भर बाद ही वह सुबकने लगती है। अरिन्दम स्वभावत: हतप्रभ हो जाता है।

अरिन्दम : यह क्या, आप रोने क्यों लगीं?

---

१. महत्त्वाकांक्षा

एक ही क्षण में प्रमीला का भाव परिवर्तित हो जाता है। उसकी आंखों में आंसू कहां हैं ! वह अब हंस रही है। अरिन्दम हतप्रभ-सा रह जाता है।

अरिन्दम : बात क्या है ?

प्रमीला : अभिनय।

प्रमीला आंख से एक बूंद उंगली की कोर में लेकर आगे बढ़ती है।

प्रमीला : ग्लेसरिन की ज़रूरत नहीं होगी।

अरिन्दम समझ जाता है कि वह किसी सहज स्त्री के पल्ले नहीं पड़ा है।

अरिन्दम : आपका नाम जान सकता हूं ?

प्रमीला अपना बैग खोलकर एक कागज़ निकालती है।

प्रमीला : सिर्फ नाम ही क्यों ? पता, फोन नम्बर···

अरिन्दम : उन सबों की ज़रूरत नहीं है। सिर्फ नाम। कौतूहल हो रहा है। एक ऐसी घटना···आत्मकथा में लिखना है न !

प्रमीला : प्रमीला। चैटर्जी। मिस।

अरिन्दम नमस्कार करता है।

अरिन्दम : ठीक है। फिर आप जा सकती हैं।

लेकिन प्रमीला जाने की कोई इच्छा जाहिर नहीं करती है।

वह अचानक फिर से हंसने लगती है।

अरिन्दम : फिर क्या हुआ ?

प्रमीला : अच्छा, आप तो इतने-इतने प्रेम के दृश्य में अभिनय कर चुके हैं, इतनी-इतनी नायिकाओं के साथ···लेकिन जब कोई अजनबी महिला आपके कमरे में आती है तो आप इतना नर्वस क्यों हो जाते हैं ?

अरिन्दम : नर्वस ?

प्रमीला : जरूर।

अरिन्दम : उहूं। संयत। भद्र। शिष्ट···

प्रमीला : आप परदे के बजाय ऐसे ही देखने में अच्छे लगते हैं। शायद ज़रा ज़्यादा मेक-अप व्यवहार करते हैं, है न यह बात ?

अरिन्दम : मिस चैटर्जी, मैं रात में ज़्यादा देर तक जगने का अभ्यस्त नहीं हूं।

प्रमीला : मैं हूं।

अरिन्दम : आपकी मरज़ी से मुझे चलना होगा, ऐसी कोई बात है क्या ? आप बल्कि कल आएं।

प्रमीला अरिन्दम की ओर गूढ़ अर्थपूर्ण दृष्टि से देखती है।

प्रमीला : रात में ?

प्रमीला आंखें फैलाये अरिन्दम की ओर बढ़ती है।

पूर्वदृश्य समाप्त

अरिन्दम अपनी बेंच पर लेटा है। प्रमीला की स्मृति उसके लिए ग्लानिजनक है, यह बात सहज ही समझ में आती है। उसकी आंखें बुलबुल की ओर जाती हैं। बुलबुल उसकी ओर सलज्ज दृष्टि से ताक रही है। अरिन्दम अपनी आंखें घुमा लेता है। शाम उतर आयी है, कमरे में बत्तियां जल चुकी हैं। प्रीतीश और हरेन प्रीतीश की सीट पर बैठकर शतरंज खेल रहे हैं। पास ही एक सूटकेस पर ह्विस्की की बोतल पड़ी है। दोनों ने शराब पी है किन्तु प्रीतीश अधिक सजग है, हरेन हलके नशे में है। स्वामीजी संभवतः शराब की गंध बरदाश्त नहीं कर

पा रहे हैं। वे दूसरी सीट पर नाक सिकोड़े बैठे हैं, यहां तक कि एक बार ऐसा लगता है जैसे वे इत्र की शीशी खोलकर थोड़ा-सा अपनी देह पर छिड़क लेते हैं। माली कमरे में नहीं है।

प्रीतीश : आप निर्णायक खेल खेलते हैं साहब।

हरेन : पहले बहुत बढ़िया खेलता था···जानते हैं, मास्टर गेम्स स्टडी करता था···अब अभ्यास छूट गया है।

प्रीतीश : अगर यह बिना अभ्यास का खेल है···

प्रीतीश चाल चलता है।

हरेन : अॅलकाइन··· केपेवेलन्का···जानते हैं, खेल का मगर हिन्दुस्तान में ही आविष्कार हुआ था।

प्रीतीश : हें हें···फिर बताइए तो सही, हम लोगों का कोई कृतित्व ही नहीं है, यह कहना···

हरेन : अब नहीं···कुछ भी नहीं···बट यू सर, हैव ए चार्मिंग वाइफ,[1] वे कहां गयीं ?

प्रीतीश : माली ?

हरेन : मॉली जॉली फॉली—बाइ गॉली यू'र लकी, मिस्टर बर्मन।

प्रीतीश : सरकार।

हरेन : सरकार··· सरकार येस सर···मिस्टर स्पेक्ट्रल ऐड्वर्टाइज़िंग। हरेन एक चाल चलता है। प्रीतीश 'हां-हां' चिल्ला उठता है।

प्रीतीश : यह नहीं, यह नहीं···मेट हो[2] रही है।

हरेन : मेट—मेट—योर मेट सर, इज़ ग्रेट, सर।

स्वामीजी प्रीतीश और हरेन की ओर नाराज़गी से ताकते हैं।

---

१. लेकिन जनाब, आपको एक आकर्षक पत्नी मिली है। २. शह-मात

डी कमरा।
अरिन्दम कमरे की छत की ओर ताकता हुआ लेटा है। उसकी आंखों में नींद का आभास है। छत की रोशनी आहिस्ता-आहिस्ता मटमैली हो जाती है।

अरिन्दम का सपना।
कमरे का प्रकाश स्टूडियो के प्रकाश में परिणत हो जाता है। शूटिंग चल रही है। अरिन्दम सुसज्जित नायक के वेश में खड़ा है। उसके चारों तरफ पेड़-पौधे हैं। रात के दृश्य खींचे जा रहे हैं। अरिन्दम के अलावा एक भी व्यक्ति नज़र नहीं आ रहा है। कोई बोल उठता है : 'एक्शन'। अरिन्दम यंत्रचालित की तरह चहल-कदमी करने लगता है। घास पर खड़िया से लकीर खिंची हुई है, अरिन्दम उसी खड़िया की लीक पर चल रहा है। फिल्म के एक विशाल विज्ञापन की बगल से होता हुआ अरिन्दम पैदल जा रहा है। विज्ञापन में अरिन्दम और प्रमीला की आलिंगनबद्ध प्रतिकृति है। अरिन्दम मंत्रमुग्ध की तरह पैदल चल रहा है, तभी प्रमीला की आवाज़ सुनकर वह ठिठक जाता है।

प्रमीला : (नेपथ्य से) अरिन्दम ! अरिन्दम !

अरिन्दम की दृष्टि प्रमीला पर पड़ती है। वह एक झाड़ी की ओट से झांक रही है। खड़िया की लीक छोड़कर अरिन्दम प्रमीला की ओर दौड़ने लगता है। प्रमीला जंगल के बीच दौड़ रही है, अरिन्दम उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा है।

एक विशाल दरवाज़ा। प्रमीला उसके अन्दर जाकर अदृश्य हो जाती है। अरिन्दम दरवाज़े से अन्दर जाकर

अपने-आपको क्लबनुमा एक स्थान में पाता है। चारों तरफ औरत-मर्दों का जमघट, हर व्यक्ति की आंखों में काला चश्मा। कोई भी साफ-साफ नहीं दीख पड़ता है।

अरिन्दम : प्रमीला ! प्रमीला !

गिरजा की घड़ी डिंग-डिंग आवाज़ से बारह बजने की सूचना देती है। अरिन्दम अब भी प्रमीला की तलाश कर रहा है। एकाएक एक व्यक्ति कुरसी से खड़ा होकर अरिन्दम का रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है।

व्यक्ति : आप मेरी पत्नी की तलाश कर रहे हैं ?

अरिन्दम हतप्रभ है।

अरिन्दम : आपकी पत्नी ?

व्यक्ति : आपको मालूम नहीं है ? बहानेबाज़ी कर रहे हैं ! स्काउंन्ड्रल[1] ! अरिन्दम का माथा गरम हो जाता है। इस बीच उस व्यक्ति के आसपास और भी आदमी जमा हो जाते हैं। अरिन्दम उस व्यक्ति को निशाना बनाकर मुक्का चलाता है, व्यक्ति छिटककर मेज़ पर गिर पड़ता है, शोर-गुल, हो-हल्ला के बीच सपना समाप्त हो जाता है।

।

डी कमरा।

पसीने से लथपथ अरिन्दम की नींद दूसरी बार टूट जाती है। वह उठकर बैठ जाता है। मनोरमा और बुलबुल ने अभी-अभी डिनर समाप्त किया है। बेयरा प्लेट वगैरह लेने आया है। अरिन्दम थोड़ी देर तक सर झुकाये बैठा रहता है।

---

१. बदमाश

मनोरमा : क्या हुआ ?

वेयरा : डिनर सर ?

अरिन्दम सिर हिलाकर 'ना' कहता है। वेयरा चला जाता है। अरिन्दम सीट छोड़कर खड़ा होता है और फिर झुककर सीट के नीचे से सूटकेस वाहर निकालता है। उसके वाद सूटकेस से ह्विस्की की वोतल निकालकर कमरे से कॉरीडोर में चला आता है।

कॉरीडोर।

अरिन्दम वाथरूम की ओर जा रहा है, तभी माली पीछे से पुकारती है।

माली : अरिन्दम वावू !

अरिन्दम रुकता है और मुड़कर माली की ओर देखता है। माली अरिन्दम की ओर बढ़ आती है।

माली : मेरा एक रिक्वेस्ट[1] है।

अरिन्दम : कहिए···

माली : मैं सिनेमा में उतरना चाहती हूं, आप हेल्प[2] कर सकते हैं ?

अरिन्दम अचकचाकर माली की ओर ताकता है।

माली : मैंने स्कूल में एक्टिंग की है—नाचना जानती हूं, गीत गाना भी आता है।···

अरिन्दम : आपके पति आपके साथ हैं न ?

इस प्रश्न से माली का उत्साह थोड़ा ढीला पड़ जाता है।

अरिन्दम : हैं न ?

माली : हैं।

---

१. निवेदन

२. सहायता

अरिन्दम : उनसे कहिए कि मुझसे मिलें, फिर मैं देखूंगा ।
अरिन्दम चला जाता है ।
पीछे से अरिन्दम का कंठस्वर सुनायी पड़ता है ।

हरेन : आः देयर शी इज़ ।[१]
हरेन और प्रीतीश आगे बढ़ते हैं, हरेन लड़खड़ा रहा है, वह माली की तरफ देखता हुआ बेवकूफ की तरह हंसता है ।

हरेन : अब तक आप कहां थीं, अयं ?

माली : यों ही ज़रा···

हरेन : आपके पति से कह चुका हूं—किसी दिन दिल्ली में हमारे घर पर आइए—आकर चाय-वाय लीजिएगा, अयं ?

माली : सोचूंगी···इक्सक्यूज़ मी···।[२]
माली बगल से होती हुई कमरे की ओर चली जाती है । हरेन के चेहरे की हंसी बुझ जाती है । प्रीतीश व्यग्रता के साथ उसकी ओर ताक रहा है ।

हरेन : मैं···आपके मामले पर···सोचूंगा···आइ कैन नॉट कमिट माइसेल्फ नाव[३]···
प्रीतीश की स्थिति शोचनीय है । उसे मालूम है कि उसका शिकार हाथों से निकल गया ।

प्रीतीश : येस सर···

हरेन : आइ 'ल थिंक् अबाउट इट[४]···

प्रीतीश : येस सर···
हरेन अपने कमरे के अन्दर चला जाता है । प्रीतीश भी अपने कमरे की ओर बढ़ता है ।

---

१. ओह, वह वहां है ?
२. मुझे क्षमा करें ।
३. मैं अभी वचनबद्ध नहीं हो सकता ।
४. मैं इसके बारे में सोचूंगा ।

बाथरूम।

अरिन्दम सीधे बोतल से ही मुंह में शराब ढाल रहा है।

●

वी कमरा।

प्रीतीश आता है। स्वामीजी सीट पर बाबू साहब की तरह भोजन करने में तल्लीन हैं। माली खिड़की से बाहर अंधेरे की ओर देख रही है।

प्रीतीश : तुम कुछ भी नहीं खाओगी माली ? डिनर देने को कहूं ?

माली : नहीं।

प्रीतीश : माली, तूमने मुझे गलत समझा है।

माली : मैं तुमसे एक अरेंजमेंट[1] करना चाहती हूं।

प्रीतीश : अरेंजमेंट ?

माली : तुमने जैसा कहा है, वैसा ही करूंगी। आइ 'ल बी नाइस टु हिम[2]...अगर इससे तुम्हें सुविधा हो तो। लेकिन बदले में तुम्हें एक काम करना होगा।

प्रीतीश : क्या ?

माली : तुम्हें अरिन्दम मुखर्जी से कहना होगा कि मेरे फिल्म में उतरने से तुम्हें कोई एतराज़ नहीं है। तुम अपना आफिस संभालोगे और मैं अपना काम।

प्रीतीश की भौंहों पर बल पड़ जाता है।

प्रीतीश : फिल्म में ?

माली : हां—फिल्म में।

प्रीतीश : यह नहीं हो सकता, असंभव...

---

१. समझौता

२. मैं उसके प्रति सहृदय रहूंगी।

बाथरूम का दरवाज़ा खोलकर हाथ में खाली बोतल थामे अरिन्दम बाहर आता है। देखते ही पता चल जाता है कि वह गहरे नशे में है।
हाथ में बोतल थामे अरिन्दम ट्रेन के दरवाज़े की तरफ बढ़ता है। दरवाज़ा खोलकर बोतल ट्रेन की पटरियों की तरफ फेंक देता है।

कॉरीडोर।
अरिन्दम कंडक्टर गार्ड उपेन को आवाज़ देता है।

अरिन्दम : ओ साहब, सुनिए।
उपेन बाबू जल्दी-जल्दी अरिन्दम की ओर बढ़ते हैं।

उपेन : सर ?

अरिन्दम : वो···आप लोग क्या कहते हैं···सीटिंग कार···

उपेन : चेयरकार सर ?

अरिन्दम : हां-हां—चेयरकार।···मिस सेनगुप्त···

उपेन : हां सर···

अरिन्दम : गोरी-चिट्टी···आंखों पर चश्मा···और फाउंटेनपेन यहां खुंसा हुआ···समझे ?

उपेन : येस सर।

अरिन्दम : क्या समझे ?
उपेन को बेहद संकोच का अनुभव हो रहा है, लेकिन अरिन्दम भी छोड़ने वाला जीव नहीं है।

अरिन्दम : क्या समझे ?

उपेन : मिस सेनगुप्त, फेयर कम्प्लेक्शन···आंखों पर चश्मा···

अरिन्दम : और क्या ?

उपेन : जी···पेन···

अरिन्दम : कहां ?

उपेन : जी···व—व्लाउज···यहां···

अरिन्दम : गुड। जाकर कहिए कि मैं बुला रहा हूं।

उपेन : येस सर।

उपेन हतप्रभ होकर चेयरकार की ओर चला जाता है। अरिन्दम दो पग आगे बढ़कर वृद्ध अघोर चाटुर्ज्या के दरवाज़े के सामने जाकर खड़ा होता है। अघोर चाटुर्ज्या कुल मिलाकर मुर्गे की एक टांग मुंह में रखने ही जा रहा है कि तभी अरिन्दम पहुंच जाता है। देखते ही पता चल जाता है कि अरिन्दम नशे में है। वृद्ध विस्फारित नेत्रों से अरिन्दम की ओर ताकता है।

अरिन्दम : क्या हो रहा है, बावा।

अघोर निर्वाक् हो जाता है, उसके हाथ में अव भी मुर्गे की टांग थमी है। अरिन्दम गीत की एक कड़ी सुनाने का लोभ संभाल नहीं पाता है।

अरिन्दम :
अगर प्राण के सखे,
नहीं तुम दिखे,
दूर क्यों खड़े, पास आओ न

गीत गाने के बाद अरिन्दम और एक वार खुलकर कह-कहा लगाता है, उसके वाद वूढ़े के दरवाजे से हट जाता है।

सी कमरे की वह छोटी-सी लड़की—रीता—कॉरीडोर में खड़ी अरिन्दम की ओर देखती है।

सुबह के देखे अरिन्दम से इस लड़खड़ाते अरिन्दम में रीता को कोई समानता नहीं मिलती है।

हंसता हुआ अरिन्दम ज्यों ही रीता की ओर एक कदम आगे बढ़ता है, वह संत्रस्त जैसी एक ही दौड़ में अपने कमरे के अन्दर भाग जाती है।

अरिन्दम के चेहरे पर की हंसी गायब हो जाती है।

कॉरीडोर की संकीर्णता एकाएक उसे असह्य जैसी लगती है। वह कॉरीडोर का दरवाज़ा खोलकर बाहर के दरवाज़े के पास आता है। उसके बाद उस दरवाज़े को खोलकर गरदन बाहर निकालकर झुक पड़ता है।

अब उसकी दृष्टि तीव्र गति से भागती रेलगाड़ी की पटरियों पर है। पटरियां तेज़ी के साथ ट्रेन की विपरीत दिशा की ओर भाग रही हैं। पटरियां जैसे अरिन्दम की ओर बढ़ रही हैं। अरिन्दम उस ओर निर्निमेष दृष्टि से ताक रहा है। अपनी देह को उसने सामने की तरफ और अधिक झुका दिया है। चलती गाड़ी की तीखी आवाज़ से कान खोलना मुश्किल है। पटरियां और भी निकट खिसक आती हैं···और भी···सहसा कंडक्टर गार्ड की बातों से अरिन्दम की चेतना वापस आती है।

उपेन : सर, मिस सेनगुप्त सर !

अरिन्दम अपने-आपको संभालता है। दरवाज़ा बन्द कर, उस पर पीठ टिकाये खड़ा होता है। अदिति सामने ही खड़ी है और उसकी ओर एकटक देख रही है। दोनों को एकान्त में छोड़कर उपेन चला जाता है।

अरिन्दम : मैं···आइ' म ड्रन्क।[१]

अदिति : जाती हूं।

अरिन्दम : मैं आपसे कई सवाल करना चाहता हूं।

---

१. मैं नशे में हूं।

अदिति : कीजिए।

अरिन्दम : मेरे बारे में आज अखबार में एक खबर छपी है, इसकी सूचना आपको है ?

अदिति : है।

अरिन्दम : आपको अंदरूनी बातें मालूम हैं ?

अदिति : नहीं।

अरिन्दम : आप जानना चाहती हैं ?

अदिति : ज़रूरत ही क्या है ?

अरिन्दम : बातें मगर बड़ी दिलचस्प हैं।

अदिति : हो सकती हैं।

अरिन्दम : और···

हरेन बोस कॉरीडोर के दरवाज़े से निकलकर उनपर संदिग्ध कटाक्ष डालता है और बाथरूम की ओर चल देता है।

अरिन्दम : आपको इन्टरव्यू कमप्लीट करना है न।

अदिति : मगर मैं जानना नहीं चाहती।

अरिन्दम : मैं कहना चाहता हूं। एक शादीशुदा···

अदिति तीव्र स्वर में बाधा पहुंचाती है।

अदिति : कोई ज़रूरत नहीं है अरिन्दम बाबू।

अरिन्दम : लेकिन मेरे लिए ज़रूरी है—मेरे लिए।

अदिति : क्यों ?

अरिन्दम अपनी छाती पर हाथ रखता है।

अरिन्दम : यहां जमकर पड़ा हुआ हूं। कोई आदमी नहीं है, जिसे कहूं। आज जो हैं···किसी दिन वे अगर पीछे छूट जाएं··· और कोई साला···सॉरी।

अदिति उदास हंसी हंसती है।

हरेन बाथरूम से निकलकर दुबारा उन लोगों की ओर

ताकता हुआ कॉरीडोर में घुस जाता है ।

अदिति : मान लीजिए कि आप सब कुछ कह चुके हैं । आपने जो नहीं बताया है, मैंने अनुमान से उन्हें जान लिया है ।

अरिन्दम : जान लिया है ?

अदिति : हां ।

अरिन्दम : मेरी नयी तसवीर मार खा जाएगी, यह बात जानती हैं ?

अदिति : जान गयी ।

अरिन्दम : इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है, यह जानती हैं ?

अदिति : हो सकता है, जानती हूं ।

अरिन्दम कुछ क्षणों तक खामोश रहता है । उसके बाद तीव्र आत्मग्लानि का भाव उसके चेहरे पर तैरने लगता है ।

अरिन्दम : अपने देवतुल्य नायक को देख लिया न ?

अदिति : देख लिया ।

अरिन्दम : ओके । अब आप जा सकती हैं ।

अरिन्दम कॉरीडोर का दरवाज़ा खोल देता है ।

अदिति : पहले आप जाइए, उसके बाद मैं जाऊंगी ।

अरिन्दम दरवाज़े की ओर बढ़ता है ।

अरिन्दम : और आप मेरे बारे में जो भी मरज़ी हो, लिख सकती हैं ।···जो भी मरज़ी···एनिथिंग···आई डोन्ट केयर[1] ।

अरिन्दम लड़खड़ाता हुआ, दोनों तरफ की दीवारों को थामे अपने कमरे की ओर बढ़ता है ।

डी कमरा ।

---

१. जो कुछ भी···मैं परवाह नहीं करता ।

दरवाज़ा आवाज़ करता हुआ खुलता है। मनोरमा और वुलवुल चिहुंक उठते हैं। अरिन्दम नशे में धुत दरवाज़े पर खड़ा है।

अरिन्दम मनोरमा की ओर देखता है और आंखें झुका लेता है।

अरिन्दम : अन्यथा···न लें···मैं···मैं अस्वस्थ हूं।

अरिन्दम अपनी सीट पर पछाड़ खाकर गिर पड़ता है और निश्चेष्ट हो जाता है। मनोरमा उसकी ओर ताकती है। अरिन्दम का एक पैर कमरे के फर्श पर पड़ा है। मनोरमा उठकर जाती है, अरिन्दम का पैर पकड़कर उसे सीट पर रखती है और उसे अच्छी तरह से लिटा देती है। वुलवुल की आंखों में आंसू उमड़ आते हैं।

अरिन्दम उसी हालत में वेहोश पड़ा है।

फेड आउट।

फेड इन।

दूसरे दिन का प्रभातकाल।

वेस्टिव्यूल ट्रेन अथक वेग से दिल्ली की ओर दौड़ी जा रही है। उसकी वगल से एक दूसरी ट्रेन तेज़ आवाज करती हुई विपरीत दिशा की ओर चली जाती है।

डी कमरा।

अरिन्दम, हरेन, वुलवुल, मनोरमा सभी नींद में खोये हुए हैं।

चेयर कार।
अदिति, शेफाली और अजय नींद में डूबे हुए हैं।

वी कमरा।
स्वामी जी संभवतः प्रातःकाल सोकर उठने के अभ्यस्त हैं।
वे अपनी सीट पर बैठकर सेव खा रहे हैं।
दूसरी ओर लोअर बर्थ पर माली नींद में खोयी हुई है।
ऊपर के बर्थ पर सोये प्रीतीश की नींद टूटती है। वह करवट लेता है।

स्वामीजी : गुड मार्निग।
प्रीतीश : ऊं ? ओ···गुडमार्निग।
प्रीतीश लेटे-लेटे ही उबासी लेता है।
प्रीतीश : अलीगढ़···?
स्वामीजी : बस, आ ही चला।
प्रीतीश मुंह बनाकर कम्बल को ज़ोरों से दबाता है।
स्वामीजी : ए बिग हेडेक।
प्रीतीश : अयं ?
स्वामीजी : आपका विज्ञापन का आफिस है, यही न ?
प्रीतीश : अब तक तो यही है।
स्वामीजी : आप लोग धार्मिक संस्था का काम करते हैं ?
प्रीतीश के लिए यह प्रश्न अप्रत्याशित है।
प्रीतीश : धार्मिक संस्था ? विज्ञापन ?
स्वामी जी अपने बैग से कागज़ात बाहर निकालते हैं।
स्वामीजी : आपने डब्लू डब्लू डब्लू डब्लू का नाम सुना है।
प्रीतीश : डब्लू···?

स्वामीजी : वॅर्ल्ड-वाइड विल वर्क्स ।

प्रीतीश : क्या वर्क्स ?

स्वामीजी : विल···यह रहा···

स्वामी जी कागज़-पत्तर प्रीतीश की ओर बढ़ा देते हैं ।

प्रीतीश : बाद में देखूंगा साहब···चश्मा नहीं है···

स्वामीजी : ह् वेयर देयर इज़ ए विल, देयर इज़ ए वे टू प्रागनास्टि-केट एंड प्रिवेन्ट ग्राल कटैस्ट्रफिस एंड कलैमिटिज़ ।[१]

प्रीतीश : आइ सी ।

स्वामीजी : हमारा विश्वास है कि अधिसंख्य व्यक्ति यदि एकत्र होकर एकाग्रचित्त से किसी विषय की विल[२] करे तो उसका फल अवश्यंसभावी है। चाहे युद्ध हो, चाहे दुर्भिक्ष हो, चाहे महामारी हो—एनिथिंग कैन वी फोरसीन एंड फोर-स्टल्ड[३] । हिन्दुस्तान के हर बड़े शहर में हमारी ब्रांच है और हमारा उद्देश्य है : टु एक्सप्लोर ऐंड एक्सपैंड ।[४] लेकिन इसके पहले हम लोगों का विज्ञापन होना चाहिए और एक एम्ब्लम[५]···

अन्त में क्या स्वामी जी ही प्रीतीश के मुवक्किल होंगे ? प्रीतीश तनिक आशान्वित होकर कुहनी के बल बैठ जाता है :

प्रीतीश : बजट बना लिया है ?

स्वामी : थर्टी थाउजेंड रुपीज ।

---

१. जहां चाह है वहां राह है कि तमाम अनर्थों और विपत्तियों का पूर्वानुमान कर उनका निवारण किया जा सकता है ।

२. इच्छा

३. किसी भी वस्तु का पहले ही पता लगाकर उसके रोकने का प्रबंध किया जा सकता है ।

४. छानबीन कर प्रसार करना ।

५. प्रतीक

प्रीतीश का चेहरा बुझ जाता है। कहां वह पांच लाख का सपना देख रहा था और कहाँ ये भले मानस कह रहे हैं···

स्वामीजी : आपसे इसके विषय में कुछ बातचीत करनी थी। आप दिल्ली जा रहे हैं न ?

प्रीतीश : जी हां।

स्वामीजी : आपका दिल्ली का पता···

प्रीतीश : ठहरिये साहब, पहले नीचे उतरने दीजिए···

डी कमरा।

अरिन्दम अब भी नींद की बांहों में खोया है। उसके माथे पर धूप की थिगलियां ठिठककर खड़ी हैं, ट्रेन के मुड़ते ही तीखी धूप आहिस्ता-आहिस्ता सरककर उसकी नींद तोड़ देती है।

मनोरमा : (नेपथ्य से) सुप्रभात।

अरिन्दम : ओ, हां···सुप्रभात।

अरिन्दम उठकर बैठ जाता है। घड़ी पर नज़र पड़ते ही वह अचकचा उठता है।

अरिन्दम : यह क्या—साढ़े नौ।

मनोरमा : हम सोच रहे थे कि थोड़ी देर बाद आपको जगा देंगे।

बुलबुल आज नीचे उतरकर अपनी मां की गोद में सिर रखकर लेटी हुई है। हरेन एक किनारे बैठा आज का अखबार पढ़ रहा है।

उठते समय अरिन्दम को ऊपर के बन्क से ज़ोरों का एक धक्का लगता है। मनोरमा और बुलबुल घबरा उठती हैं।

मनोरमा : चोट लगी ?

अरिन्दम हंसकर सिर हिलाता है और 'नहीं' कहता है। वह कमरे के आईने के सामने खड़ा होकर अपने बालों को कंघी करता है और फिर अपनी जगह पर बैठ जाता है। अब उसकी आंखें बुलबुल पर जाती हैं।

अरिन्दम : वह कैसी है ?

मनोरमा : आज उसे बुखार नहीं है। उसकी धारणा है कि ऐसा आपकी ही बदौलत हुआ है।

अरिन्दम : अरे बाबा, मुझमें यह गुण है, इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी।

मनोरमा : वह ज़िद कर रही है।

अरिन्दम : क्या ?

मनोरमा : आपका आटोग्राफ चाहिए।

अरिन्दम : कापी है ?

बुलबुल लजाने लगती है। अरिन्दम बैग खोलकर उससे अपनी एक तसवीर निकालता है। उसकी खुद की कलम में स्याही नहीं है अतः उसे हरेन के पास जाना पड़ता है।

अरिन्दम : ज़रा आपकी कलम···

हरेन अनिच्छा के बावजूद जेब से कलम निकालकर अरिन्दम की ओर बढ़ा देता है।

अरिन्दम : तुम्हारा नाम क्या है भाई ?

बुलबुल उधेड़-बुन में है। मनोरमा ही उत्तर देती है।

मनोरमा : सैरन्ध्री।

अरिन्दम अचकचा उठता है। बुलबुल तत्काल समस्या का समाधान कर देती है।

बुलबुल : बुलबुल !

अरिन्दम के लिए यह बहुत ही सरल जैसा है। वह तसवीर

पर लिखता है : स्नेह की बुलबुल को—अरिन्दम मुखोपाध्याय ।

डाइनिंग कार ।

मैनेजर और वेयरा के अतिरिक्त डाइनिंग कार में दो और व्यक्ति हैं, मध्यवयस्क एक व्यक्ति पोर्टफोलियो से अपना कागज-पत्तर निकालकर देख रहे हैं और दूसरी ओर अदिति ने कुल मिलाकर अब तक प्रूफ देखना समाप्त किया है । अरिन्दम आता है । मैनेजर हड़बड़ता हुआ आगे बढ़ता है ।

मैनेजर : कुछ खाएंगे सर ?

अरिन्दम : थोड़ी देर बाद ।

अरिन्दम अदिति की ओर बढ़ता है । अदिति उठकर खड़ी हो गयी है ।

अदिति : आप कैसे हैं ?

अरिन्दम आकर अदिति के सामने खड़ा हो गया है और उसकी ओर ताक रहा है ।

अरिन्दम : आप तो सब समझ ही रही होंगी, आप ही बताइए कि कैसा हूं ।

अदिति : अच्छे हैं ।

अरिन्दम सिर हिलाता है ।

अरिन्दम : उहं !

अदिति : क्यों ?

अरिन्दम : कहीं जैसे एक···रिक्तता···एक अभावबोध···

अदिति : क्यों ?

अरिन्दम : लगता है, आपसे फिर मुलाकात नहीं होगी । आप तो

हमारी लाइन में आएंगी ही नहीं।

अदिति : नहीं आऊंगी। जानते हैं, हमारी दुनिया ही अलग है। हम ट्राम-बस में चलते हैं, राह-बाट में चक्कर काटते हैं...

दोनों एक-दूसरे की ओर कुछ क्षणों तक देखते हैं। अरिन्दम की दृष्टि में अब उद्धतपन का नमोनिशान नहीं है। अदिति की दृष्टि से एक प्रकार की सहजता और संवेदनशील सौहार्द झांक रहा है।

अरिन्दम : एक-एक कर तीन तसवीरें मार खा जायें तो मैं भी उसी दुनिया में लौट सकता हूं।

अदिति : ऐसा नहीं होने जा रहा है। किसी भी हालत में नहीं। आप जहां हैं, वहीं रहेंगे। बहुत दिनों तक। आपका मार्केट बरकरार ही रहेगा।

अरिन्दम मीठी हंसी हंसता है।

अदिति का बैग खुला ही पड़ा था, वह उससे कागज का एक पुलिन्दा बाहर निकालती है।

अदिति : आपका इंटरव्यू...

अदिति कागज़ के पुलिन्दे को मोड़-मोड़कर सामने रखे पानी के गिलास में डाल देती है।

अरिन्दम : यह क्या! ...आप स्मरण से लिखेंगी?

अदिति : मन में सहेजकर रख लूंगी। ...चलूं।

अदिति हंसकर नमस्कार करती है और बैग लिए डाइनिंग कार के बाहर चली जाती है। अरिन्दम कुछ देर तक अनमनेपन के साथ सामने की ओर देखता है।

दिल्ली आ गयी है।

अरिन्दम हाथ में सूटकेस थामे दरवाज़े के सामने खड़ा है। प्लेटफार्म पर उसका स्वागत करने के लिए लोग-बाग फूलों के गजरे और कैमरा वगैरह लेकर आये हैं, उनमें से कई व्यक्ति अरिन्दम पर नज़र पड़ते ही चलती गाड़ी के साथ दौड़ने लगते हैं। अन्त में गाड़ी रुकती है। अरिन्दम फर्स्टक्लास से नीचे उतरता है। क्षण-भर में लोगों का मजमा उसे घेर लेता है, उसके गले में फूलों के गजरे डाले जाते हैं, चारों तरफ कैमरे का फ़्लैश जलने लगता है।

थर्ड क्लास की बोगी से उतरकर अदिति अपने चाचा को प्रणाम करती है। दोनों व्यक्ति प्लेटफार्म के मजमे के बीच से होते हुए आगे बढ़ते हैं, अदिति बेहद उत्तेजना के साथ अपने चाचा से कुछ कह रही है—संभवतः अपनी पत्रिका के बारे में।

अदिति बातचीत करती हुई अरिन्दम के सामने से होकर चली जाती है। फूलों के हारों से सुसज्जित अरिन्दम को पुनः लोकप्रिय चलचित्र नायक की भूमिका स्वीकारनी पड़ती है। वह अब कैमरे की ओर ताकता हुआ मुसकरा रहा है।

• • •

मुद्रक : शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-३२
1146

प्रविष्ट संख्या 64893
21.1.83
Institute of Advanced Study

कुछ श्रेष्ठ नाट्य कृतियां

व्यक्तिगत	लक्ष्मीनारायण लाल
अब्दुल्ला दीवाना	लक्ष्मीनारायण लाल
करफ्यू	लक्ष्मीनारायण लाल
सारंग-स्वर	रामकुमार वर्मा
जुही के फूल	रामकुमार वर्मा
अग्नि-शिखा	रामकुमार वर्मा
सन्त तुलसीदास	रामकुमार वर्मा
युगे युगे क्रान्ति	विष्णु प्रभाकर
रक्तदान	हरिकृष्ण प्रेमी
ममता	हरिकृष्ण प्रेमी
आषाढ का एक दिन (विशिष्ट संस्करण)	मोहन राकेश
पैर तले की ज़मीन	मोहन राकेश
अभिनव एकांकी	सं० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ
नये एकांकी	सं० अज्ञेय
श्रेष्ठ एकांकी	सं० कृष्ण विकल
अशोक	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार
एक से बढ़कर एक	राजेन्द्र कुमार शर्मा
कल, आज और कल	हरचरणसिंह
कंचनजंघा	सत्यजित राय

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली